केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जनवरी २०१० अंक, वर्ष १६, नं ५५, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

अकादमी सदस्य शरत्चन्द्र विशेषांक !!

देश स्वतंत्र हुआ ६३ वर्ष पहले। देश की पताका, भाषा,
स्वाधीनता, संस्कृति सुरक्षित रहे, जन-जन सुखी रहे।

जिसने प्रकृति को सच्चे अर्थ में प्यार किया
प्रकृति का सुन्दर चित्र सच्चे अर्थ में दुनिया को दिखा दिया,
जिसने हरिजन-गिरिजन युवकों को डोकमेंटरी सिखाने का कष्ट सहा,
जिसने रेल से गिरते देखकर किसी के प्राण बचाने की चेष्टा की अपने प्राण गंवाकर,
उस त्यागशील की आत्मा को मुक्ति मिले।

स्कूल विद्यार्थी - शरत्चन्द्र शरत्चन्द्र को बिस्कुट खिलाता है। बारह वर्ष की उम्र में।

श्री. सुदर्शन कार्तिकपरंबिल के काव्य ओरुवट्टम् कूडी का लोकार्पण डा. चन्द्रशेखरन नायर पुस्तक का परिचय देते हैं

अपनी बहिन नीरजा उसके पति श्री.राजेन्द्रन और उनकी दो बेटियों-भावना और दर्शना के फोटो शरत्चन्द्रन खींचता है।

शरत्चन्द्रन अपने माता-पिता और बहिन नीरजा के साथ।

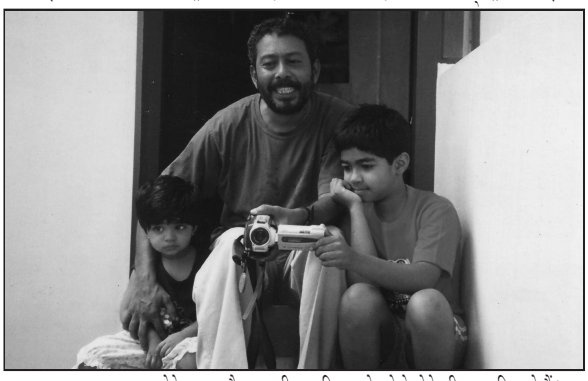

शरत्चन्द्रन अपना भानजा योगेशचन्द्र और भानजी मालविका को फोटो लेने की कला सिखाते हैं।

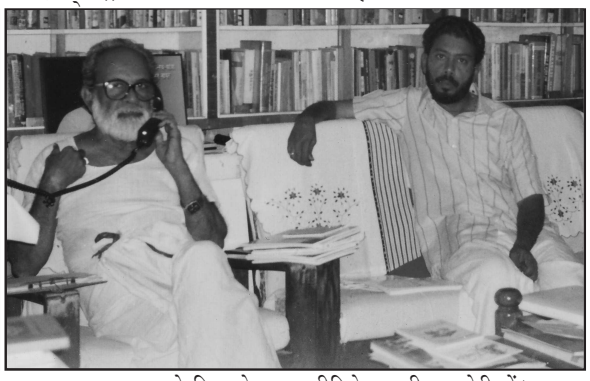

शरत्चन्द्रन अपने पिता के साथ श्रीनिकेतन की लाइब्रेरी में।

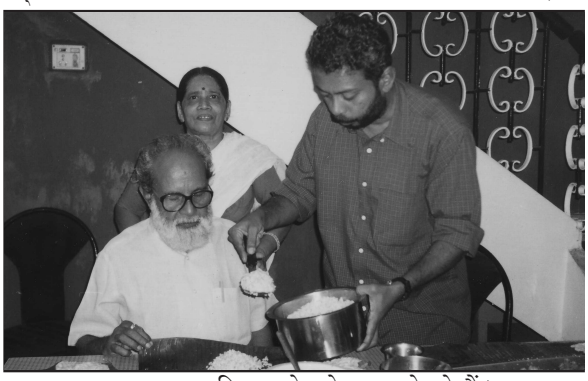

शरत्चन्द्रन पिता को भोजन परोसते हैं।

शरत्चन्द्रन परिवार के साथ भोजन कर रहे हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

(अकादमी सदस्य शरत्चन्द्र विशेषांक)

२ जनवरी २०१० अंक, वर्ष १६, नं ५५, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (वारणासी)

परामर्श-मण्डल

डा० बि.के.नायर
डा० एन.रवीन्द्रनाथ
डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० वी.पी.मुहम्मद कुंजु मेत्तर
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीरामदास मिशन मुद्रणालय,
चेंकोट्टकोणम, तिरुवनन्तपुरम-८७
मूल्य-एक प्रति: २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडु:- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिपुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरात:-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटक:-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोग, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्रा:- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंङगाबाद-३, औरंङगाबाद-२, औरंङगाबाद, औरंङगाबाद-२, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगाल:-** कलक्कत्ता। **हैदराबाद:-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटी:-** कानपुरा। **नई दिल्ली:-** आर, के पुरम। गोवा:- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

सी. शरत्चन्द्रन: त्यागशील जीवन का नमूना

यह संपादकीय शरतचन्द्रन का पिता लिखता है। सम्पादकीय पूरा-पूरा सत्य कथन है। इसे लिखते हुए एक पिता को संयम का किस हद तक पालन करना है, उसे वह जानता है। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का यह तीसवाँ वर्ष है। उसके प्रारंभ से लेकर तीस वर्ष तक संस्था के सम्मेलनों और बैठकों के फोटो एवं डोकुमेंटरी की व्यवस्था स्वयं अपने जिम्मे पर शरत ने की है। भविष्य में अकादमी की जिम्मेदारी भी उसको सौंप दी गयी थी।

आज शरत्चन्द्रन कालकवलित है, साथ ही अनेक विशेषणों से भूषित भी। जैसे श्रेष्ठ आक्टिविस्ट, गरीबों-अशिक्षितों, अनाथों के सहकर्मी, प्रकृतिप्रेमी प्रतिरोधों के चित्रकार, कालद्रष्टा, सही संगाती, यथार्थ सिनेमा संविधायक इत्यादि-इत्यादि।

बाल्यकाल से स्वातंत्र्य मोही, कला-प्रेमी, चित्रसंविधायक रहा था। अध्ययन कक्ष से ज्यादा स्वतंत्र पठन से उन्मुख था। मैंने देखा था कि उसका बनाया फोटो जिसमें स्वयं अपने को मिठाई खिलाता है। आमने-सामने बैठकर शरत्चन्द्र शरत्चन्द्र को मिठाई खिलाता है। - Double role - वह भी दस बरस की उम्र में। इस प्रकार का कलाप्रेमी शिक्षा-परीक्षा में कहाँ विजयी होगा। शालान्त परीक्षा में फेल हो गया तो पिता का कष्ट बढ़ गया। पुत्र ओट्टप्पालम हाईस्कूल में पढ़ रहा था और पिता मट्टन्नूर कालेज में प्रोफसरी करता था। आखिर साथ ले गया। तलश्शेरी में टूटोरियल में भरती करा दिया और परीक्षा पास करायी, अपने कालेज में पढाया। त्रिवेन्द्रमवाले महात्मा गान्धी कालेज में बी.काम छात्र बना, पास हुआ। पिता के मोह का भंगकर बंबई गया और एक कंपनी में कुछ समय तक नौकर रहा। इस बीच डोकमेंटरी की ओर झुक गया। साला श्री राजू रियाद ले गया। वहाँ अपने बिटिश कौंसिल में अफसर बना लिया। मैं आश्वस्त हो गया कि अच्छे स्थान पर अफसर बना। दस साल तक वहाँ काम किया और सुना वापस आ रहा है। हाँ, वापस आया साथ डोकमेंटेशन की जरूरी सामग्री भी साथ ले आया, मानों इन चीज़ों को बटोरने के लिए ही बिटिश कौंसिल का काम संभाला। पूर्वाग्रह का निश्चय होगा कि करीब दो सौ विश्व विख्यात सिनेमा कासेटी भी साथ लाया, जिनका प्रदर्शन बाद में हर कहीं, पाठशालाओं में, घरों में, जलसों में, उत्सव के मैदानों में, जहाँ संभव था, सब कहीं उन सिनेमा चित्रों की प्रदर्शिनी करायी जाती थी। भारत आकर एक आश्चर्यजनक कार्य किया कि अकेले गंगोत्री गया और वहाँ के अनेक चित्र खींच लिए। मुझे, शायद प्रसन्न करने के इरादे से होगा दस-बारह कैंट पेपर और हिमालय और गंगोत्री के चित्र भेंट किये कहा कि इनका चित्र बडे आकार में खींच लीजिए।

रियाद की अफसरी के बीच में एरनाकुलम स्वदेशी सुधा से शादी की और रियाद में रहते हुए दुनियाँ भर घूम आये दोनों। विदेशी यात्रा समाप्त करते डोकमेंटरी का काम शुरु किया। सहयोगी श्री बाबुराज से मिलकर पिता का भी ३० मिनट्स की डोकमेंटरी की, जिसकी प्रदर्शिनी न कर पाया कि व्यस्तता के बीच भी अनेक चित्र तैयार किये, जो आज देश के हित में आये और सच्चे समाज-हित-कारी कर्म के कारण अत्यधिक प्रशंसित एवं पुरस्कार योग्य बने, देश-विदेशों के अन्तराल में। अपनी योजना को कार्यान्वित करने का प्रयत्न अत्यंत कठोर साध्य रहा था और प्रयत्न अपने आप में पूरा निस्वार्थ था। केवल निश्शब्द साधना मात्र थी। न प्रशस्ति का मोह था, न लागत की वापसी की प्रतीक्षा थी। जो किया सो किया समाज को साक्षी बनाकर। आँखें देखें, मन सोचे, सपनों को पूरा किया जाय, बस यही ध्यान था, लक्ष्य था। एक बात सच है, त्याग का महत्व जाना-माना जाता है। आज देशविदेशों में शरत के नाम पर स्मृति चिन्ह बनते हैं, स्मारक बनते है। त्यागशील का नमना बना है।

शरतचन्द्रन पर लेख मलयालम, हिन्दी एवं अंग्रेज़ी अखबारों में बराबर आया करते हैं। सम्पादक के पास पहूँची मासिक पत्रिकाओं में आये लेख:-

(1) केरला कालिंग - बाबुराज पेज - 35-36 (केरल सरकार की पत्रिका) (Sarath Travel never ends), (2) जनपथ - के.वी.षाजी - 36-37 (केरल सरकार की पत्रिका) (पोनकिनाक्कल बाकियाक्की-शेष छोडकर सुन्दर सपने), (3) समकालिक मलयालम - ओ.के.जोणी - 32-33 सम्पादक एस.जयचन्द्रन "समर्पित जीवन", (4) समकालिक मलयालम - आई.गोपी नाथ - 34-35 सम्पादक सामरक्षेत्र के कामरा नयन, (5) समकालिक मलयालम - कुसुम जोसफ - 36-37 सम्पादक परिस्थिति संग्राम के दृश्य चितेरे, (6) समकालिक मलयालम - अनिवर अरविन्द - 38-39 नये समाज संस्थाओं के हितैषी, (7) मातृभूमि - सी.एस.वेंकिटेश्वरन - 78-79 सम्पादक शरतचन्द्र के सरवा मित्र, चलचित्रकार, (8) दि हिन्दु - सी.एस.वेंकिटेश्वरन - 4 - फ्राईरेव्यू सरवा एवं चलचित्रकार, (9) एक्स्प्रेजों - एक्स्प्रेस रेव्यू सर्वी स - 3 - 'आन इन्डपेंडेंड सोल', (10) पटयाली समयम - एम.ए. रहमान - 57, 58, 59 - शरत सक्रियता का बलिदान, (11) शरत की स्मृतियाँ - नीलन - 5-6 - कलाभवन 30 मई 2010 सेमिनार, (12) शरत डोकू - एस. संजय - - 5-6 - कलाभवन 30 मई 2010 सेमिनार, (13) बिदाई - के.एम. पाजी - शरत - स्मृति सेमिनार 30 मई 10, (14) सिनेमा में भूताविष्ठ शरतचन्द्रन - मंगाट रत्नाकरन - 13-14 - शरत - स्मृति सेमिनार 30 मई 10, (15) प्रतिरोध के सिनेमा विधायक, एन.ई.हरिकुमार - 15-16-17 - शरत - स्मृति सेमिनार 30 मई 10, (16) समय में गलगये और समय के आगेचले : जी.पी.रामचन्द्रन - 18-19 - शरत - स्मृति सेमिनार 30 मई 10, (17) मेन वित ए डिजिटल क्यामेरा - मधुजनार्दनन - 22-23-24 - शरत - स्मृति सेमिनार 30 मई 10, (18) यूनिवेर्सट्ली - पी.रविवर्मा - मलयालम, (19) चैत्रसंगीतम, (20) श्री. शरत्चन्द्रन - डा. सकलदेव शर्मा (संपा. अंगिकालोक) दरभंगा, बिहार, (21) श्री. शरत्चन्द्रन - डा. वी.वी.विश्वम - संग्रथन, (22) श्री. शरत्चन्द्रन - डा. प्रो.तिरुमला चन्द्रन - भारत पत्रिका, केरल ज्योति-प्रो.तंकप्पन नायर

सी.शरत्चन्द्रन के नाम अनुस्मरण सेमिनार और संस्थाएं एवं पुरस्कार

मलप्पुरम में दो दिनों का सम्मेलन (८ मई २०१० और ९ मई २०१०)। त्रिवेंद्रम कलाभवन में ३० मई २०१० ९-९. श्री. के.पी कुमारन सम्मेलन का उद्घाटन। अनेक मित्रों एवं फिलिमनेताओं ने भाग लिया। सिनेमा हॉल में दो दिनों के प्रभाषण।

www.chandrasekharannairdr.com e-mail: drncnair@gmail.com

पाठकीय प्रतिक्रिया

परम सम्मान्य बंधुवर, सादर नमन। 29-4-2010

प्रकृति-प्रेमी सी शरत् चन्द्रन दिवंगत हो गये - पढ़कर चित को गहरा दुःख हुआ। मन शोकाकुल हो गया। सी.शरत्चन्द्रन को दिवंगत कहते हुए कंठ अवरुद्ध हो गया। आप सभी स्वजनों परिजनों के गहरे आघात से हम लोग विह्वल हो गये।

धैर्य धारण करके आप से फोन पर बात की, सहानुभूति, संवेदना व्यक्त की।

उदारमना श्री. शरत्चन्द्रन ने अपनी सहज कलात्मक प्रतिभा से समाज की जो सेवा की वह चिरस्मरणीय रहेगी। वे आजीवन परहितरत रहे। अंत में इसी कारण आत्मोसर्ग कर दिया।

परमप्रिय परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को चिर शांतिप्राप्त हो और परिजनों, स्वजनों, को हूए अपार दुःख को सहने को शक्ति।

डॉ. वीरेन्द्र शर्मा, पूर्व राजदूत तुर्किमिस्तान में, डी-२१३, इला एपार्टमेंट्स, बी-७, वसुंधरा एन्कलेव, दिल्ली-११००९६

परम आदरणीय डॉ नायर।

मैं आपकी वेदना को भलीप्रकार समझता हूँ। पिता तथा माता केलिए पुत्र का शांक बडा गहरा होता है। साथ ही, माता-पिता के रहते पुत्र का संसार से विदा हो जावे घर के लिए असहनीय दर्द भी होता है। आपका पूरा परिवार शोक-ग्रसित होगा। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको इस विषम स्थिति से सकुशल बाहर निकालने की अनुकंपा करें।

मैं गर्व नहीं करता, लेकिन यह कहता हूँ कि २२ अगस्त सन् २००३ के दिन मेरा पुत्र डा. राजेश M.B.B.S. तथा क्षेत्र का प्रख्यात डाक्टर इस संसार को छोड कर चला गया था। कारण बदमाशों द्वारा गोली से मार देना। उसके रंज से मेरी पत्नी भी सऩ २००४, मार्च ४ के दिन संसार से चली गई। बेटे के जाने के बाद हमारा २६ कमरों का मकान, साज सामान सब चला गया। समय नहीं ठहरता। अतः आप भी समय को पकड़ कर रखना। आप लेखक हैं, हिन्दी जगत् में आपका विशेष स्थान है। वह बना रहना चाहिए जो किसी समय, अपने समस्त जन-विरोधी राजाओं को मार कर श्रीकृष्ण ने किया था, वही कार्य मानवता-विरोधी विचारों को, अपने साहित्य से मार कर आप करते रहे हैं। फलतः आपका यश भी वढ़ता रहेगा। यह मेरा विश्वास है।

आपमें वह शक्ति अवश्य है जिसके बल पर आप मानव विरोधी मनोवृत्ति को चुनौती देते आ रहे हैं। यह कार्य ठहरना नहीं चाहिए।

कृपया अपना लेखन न वंद होने दे। में आप में भी श्रीकृष्णा की वही छपि और शक्ति देखता हूँ। आप श्रेष्ठ लेखक है। लेखन एक कला हैं, इस कला को निरंतर जीवित रखें, यही प्रार्थना है. आपके सुंदर स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

आपका, नत्थनसिंह, सी-७०३, गेटवे टावर, वैशाली, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश-२०१०१०

परम सम्मान्य बंधुवर, सादर नमन। 29-4-2010

प्रिय नायरजी, नमस्कार, दो दिन पूर्व प्राप्त अकादमी की शोध-पत्रिका (अक्तूबर २००९ अंक) से पता चला कि आपके एकमात्र पुत्र प्रिय शरत्चन्द्रन परिवार से सदा-सदा केलिए बिछुड़ गए हैं। स्तब्ध सा रह गया। आप ध्यान से आए, आप की अवस्था का ध्यान आया और मात्र ५२ वर्षीय पुत्र के अकस्मात् गुज़र जाने की दुर्घटना का ध्यान आया। कल्पना-निर्मित यह पूरा चित्र अत्यन्त भयावह लगा।

आपके दुख का मैं अनुमान लगा सकता हूँ - उसे शब्दो में बांधना तो असम्भव है। स्वयं को भी मैं असहाय अनुभव कर रहा हू कि मैं आपकी कोई विशिष्ट सहायता नहीं कर पा रहा हूँ। त्रिवेंद्रम उतनी दूर है कि आने के लिए समय और धैर्य चाहिए और आने के बाद भी शरत् को वो वापिस नहीं ला सकता। इस विधि यदि वह पुनः प्राप्त हो जाता तो मैं सौ बार आ जाता। मेरी हार्दिक समवेदना और सहानुभूति।

मुझे शरत् के विषय में बहुत जानकारी नहीं है। जब त्रिवेंद्रम में एक बार आपके अतिथ्य मे था तो भाभीजी से मिला था। पुत्र सम्भपतः तब विदेश में कार्यरत था। दिल्ली में आप की सुपुत्री के घर अनिल और उनके छोटे बेटे से भी मिला था लेकिन शरतं से मिलने का कभी सुयोग नहीं बना। पत्रिका से ही पता चला कि वह बहुत कला-प्रेमी, प्रकृति-प्रेमी और निर्धन जन की सभी प्रकार से सेवा करने वाला था। उनकेलिए दुर्गम स्थानों में जा कर फिल्म बनाना, उस केलिए खतरे मोल लेना, उनकी सहायता केलिए लोगों से मिड़जाना - इन्हीं लक्ष्यों केलिए वह जीवित रहा और इन्हीं केलिए अन्ततः प्राण भी गंवा दिए। किसी गिरते को बचाने केलिए अपना जीवन भी होम कर दिया। परोपकार और जन-हित-तल्लीनता में शरत्चन्द्रन से बढ़कर इस समय और कौन उदाहरणा के योग्य है?

मुत्यु का दुख और भी बढ़ जाता है जब परलोकगामी पुत्र कम आयु का, मेधावी, सर्व-सामान्य केलिए संवेदनशील, कला-निपुण और निस्स्पृही वृत्ति का रहा हो।

दुःख की इस घड़ी में मैं प्रार्थना ही कर सकता हूँ कि ईश्वर आप को इस अकस्मात् वज्रपात के दारुण दुःख से बचाने केलिए अपनी आशीर्वादी करुणा के आँचल की छाया दे, अपार धैर्य का वर दे तथा योगी जैसी वृत्ति को पुष्ट करने में आप की सहायता करे!

आपके दुःख में दुःखी, आप का मित्र,

ओमप्रकाश शर्मा प्रकाश, दिल्ली विश्वविद्यालय रामलाल आनन्द कॉलिज, बेनीतो हुआरेज़ रोड़, नई दिल्ली-११००२१

आदरणीय डा. नायरजी, सादर बन्दे, 21-5-2010

परमेश ओम् की कृपा से स्वस्थ सानन्द होंगे। आपकी पत्रिका का राजभाषा विशेषांक प्राप्त हुआ आभारी हूँ।

आपके प्रिय पुत्र श्री शरत चन्द्रन जी के असामयिक देहावसान का समाचार कष्टप्रद है। परमेश ओ३म् से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को मोक्ष की ओर सद्गति प्रदान करे तथा आप सब को यह महान दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे।

कृप्या भारी मन से हमारी भावना को स्वीकार करें। हम सदैव आपके साथ हैं। सभी को नमस्ते, योग्य सेवा लिखें।

शुभकांक्षी, डॉ. आनन्दसुमन सिंह, वैदिक प्रवक्ता, देहरादून-१

आदरणीय नायरजी,

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका के राजभाषा-विशेषांक को पढ़ते हुए ज्योही अंतिम पृष्ठ पर प्रकृति-प्रेमी सी शरत्चन्द्रन दिवंगत होने का दुःखद सगाचार पढ़ा दुःख के सागर में डूब गया।

आप सरीखे मनीषी को जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति उदीयमान शरत्चन्द्रन ने अन्तिम समय भी सहव्यक्ति की जीवनरक्षा में स्वयं को होम कर दिया। आप को ऐसे बज्राघात के क्षणों में सहन करने की शक्ति ईश्वर प्रदानकरे। पुण्यात्मा को शान्ति की कामना की प्रार्थना।

बद्रीनारायण तिवारी, संयोजक-उत्तर प्रदेश, पूर्व अध्यक्ष-उ.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन

परम पूज्यवर सादर प्रणाम,

प्रिय भाई श्री.शरत्चन्द्रन के असामयिक अवसान पर मुझे मर्मान्तक पीडा हुई है। दुःख की इस घडी में मैं आपके साथ हूँ। पूज्या शरदाम्मा को मेरे सादर चरणस्पर्श।

१९७८ में मेरी माँ और १९९९ में मेरे पिताजी का अवसान हो चुका है। अतः आप दोनों में मैं अपने माता-पिता की पावन छवि देख रहा हूँ। आप दोनों कृपया मुझे अपने आर्शीवाद दें।

ईश्वर आप दोनों को पुत्र-दुख सहने की शक्ति दें।

आपका आज्ञाकारी,

मानसपुत्र डा. सकलदेव शर्मा, ४२/६६६, बेलवागंज, लहेरिया सराय, दरभंगा-८४६००१

श्रद्धेय डा. नायरजी, 12-07-2010

आपके पोस्टकार्ड से हृदयविदारक समाचार मिला। यह जानकर हार्दिक कष्ट हुआ कि आपके सुपुत्र का असामयिक निधन हो गया है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और आप सबको इस असह्य वेदना को सहन की शक्ति दे। दुःख की इस धडी में मेरे पूरे परिवार की संवेदनाएँ आपके साथ हैं। हम सवकी ओर से आदरणीया भाभी जी को भी सांत्वना दें।

कृपया लिखे कि आपके सुपुत्र को क्या हो गया था? उसकी आयु क्या थी और उसके परिवार में कौन कौन है? श्रद्धांजली-रूप में कुछ दोहे संलग्न हैं।

सादर, साभिवादन, शोकाकुल, **डा.सुन्दरलाल कथूरिया, पारिजात, न.दिल्ली**

आदरणीय सर, सादर प्रणाम। 1-07-2010

आशा और कामना करता हूँ कि आप कुशल से है। पत्रिका का राजभाषा-विशेषंक, २ अक्तूबर ०९ मिला। आभार।

आपके सुपुत्र शरत्चन्द्रन जी के देहावसान का समाचार भीतर तक हिला गया। समाज और प्रकृति को समर्पित बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व का यों असमय जाना आपके साथ-साथ देश और समाज की भी एक अपूरनिय

क्षति है। आपके आहत मन के आसपास मेरी भी भावना है। अनुरोध है कि पत्रिका का कोई आगाभी अंक शरत्चन्द्रन जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित हो। उनके बारे में और जानने की उत्कंठा है। भवदीय।

मनुस्वामी, ४६, अहाता औलिया, मुजफफर नगर-२५१००२

सेवामें, समादरणीय श्री. चन्द्रशेखरन नायरजी, सादर प्रणाम। 31-05-2010

प्रियतम भैया, कल स्वामि कैवल्यानन्दजी से मिलने पर उन्हों ने आपको नितान्त दुःख देने वाली उस दुर्घटना के बारे में कुछ कहा। "उनकी आत्मशक्ति केलिए भगवान से मेरी हार्दिक प्रार्थना है। और में क्या लिखूँ?"

आप एक ग्रहस्थ मुनि है। भगवान से आपको तथा स्नेही परिवार की भलाई केलिए हार्दिक प्रार्थना कर रहा हूँ।

भवदीय, स्नेही,

के.एस. राघवन पिल्लै, हिन्दी प्रचारक, चेप्पाट

मानवीय डा. नायरजी, सादर प्रणाम, 28-04-2010

शरत्चन्द्रन जी के निधन की बात पत्रिका प्राप्त होने पर मालूम हुई ईश्वर दिवंगत आत्मा को शक्ति दे।

वीरेन्द्र सिंह गूम्बर, जनक पुरी, नई दिल्ली।

നമസ്കാരം. 6-4-2010

സാറിന്റെ മകൻ ശ്രീ.ശരത്ചന്ദ്രന്റെ ആകസ്മിക അകാല മരണവാർത്ത എനിക്ക് ഇന്നാണ് ലഭിച്ചത്. വിവരം അറിഞ്ഞപ്പോൾ വലിയ ദുഃഖമാണ് അനുഭവപ്പെട്ടത്. ഏതാണ്ട് 15 വർഷത്തിനു മുമ്പ് ഹൈദ്രാബാദിൽ വന്നപ്പോൾ ശരത് എന്റെ വീട്ടിൽ വന്നിരുന്നു. ആ മുഖം ഇപ്പോഴും ഞങ്ങൾക്കെല്ലാം ഓർമ്മ വരുന്നുണ്ട്.
ശരത്തിന്റെ ദിവംഗത ആത്മാവിന് ശാന്തി നേരുന്നതിനോടൊപ്പം സാറിനും കുടുംബത്തിനും ഈ വിയോഗവും ദുഃഖവും സഹിക്കാനുള്ള ശക്തിയും കഴിവും ജഗദീശ്വരൻ തരട്ടെ എന്നു പ്രാർത്ഥിക്കുന്നു.

എന്ന്, **എൻ.പി.കുട്ടൻപിള്ള, ഹൈദരാബാദ്**

സർ, 6-4-2010

ശരത്ചന്ദ്രൻസാറിന്റെ അകാലചരമ വാർത്ത അതീവദുഃഖത്തോടെയാണ് ഇന്നത്തെ മാതൃഭൂമിയിൽ വായിച്ചത്. കലാലോകത്തിന് നഷ്ടമായി മാറിയ ആ കലാകാരന്റെ വേർപാടിലുള്ള അനുശോചനം സന്തപ്ത കുടുംബാംഗങ്ങളെ അറിയിക്കട്ടെ. പരേതാത്മാവിന് നിത്യശാന്തി നേർന്നുകൊണ്ട്,

എന്ന്, സ്നേഹാദരപൂർവ്വം, **എൻ.പി.നെടുമ്പിള്ളി, മഞ്ജുമ്മേൽ**

8-06-2010

Dear Dr. Chandrasekharan, Thank you for sending me Kerala Hindi Sahitya Academy Patrika regulalry.

While going through the Patrika I came to know about the said passing away of your dear son Shri. Sharathchandran. I have no words to express my grief on such sad passing away of our dear son.

Please accept our humble condolences on his passing away and convey the same to your wife Smt. Sharada Deviji. We pray that the noble soul of the departed rest in peace. May God give you couroage to bear this great loss.

With kind regards, yours sincerely,

Parsram Mangharam, Mangharam House, No.528/B, 12th Cross Rd., Rajmahal Vilas Extn., Bangalore-560080

Dear Prof. & Mrs. Nair, 5-04-2010

My wife and I were very saddered to hear the accident to your son Sarat, which resulted in his loss of life and would like to convey to you our sincere condolences.

I had the highest respect for him during his time in the British Council offices in Riyadh and we had heard of his valuable work in India. We only hope that you will find the courage and strength to bear his loss.

This must be a very difficult time has you and Neeraja and of course for his dear wife Sudha for whom we feel profound sympathy. We should be most grateful if you would convey our heartfelt condolenees to her.

Yours, very sincerely,

Clive and Ann Smith, 29 Rossette Garden Mansions, Flood Street, London SW35QX

Friend and Filmmaker

Venkiteswaran C.S.

Tribute Documentary filmmaker and activist Saratchandran's filmography reads like a chronicle of the history of resistance in Kerala during the last few decades.

For the various peoples' movements in Kerala, the passing away of Saratchandran, documentary filmmaker and activist, is a heart-wrenching loss of a dear comrade and relentless chronicler. He was an integral part of all the major popular struggles in the region during the last few decades. Right from the legendary Silent Valley movement and Mavoor struggle against Gwalior Rayons, to the popular protest at Plachimada against Coca Cola and the Chengara land rights struggle, he has there, rubbing shoulders with them, sharing their dreams and frustrations, Sarat's filmography literally reads like a chronicle of the history of resistance in Kerala during the last decades on major fronts-environment. Anti-pollution, displacement, right to land and livelihood.

Documenting the world: For Sarat filmmaking was a political act where cinema accomplished one of its most elemental of qualities: to 'document' the world before it and to bring those images back to the people. Sarat was a virtual conduit of images between he world and Kerala, talking images of local resistance to the world and vice versa. The very process of filmmaking he adopted involved the people at all stages-from background research and shooting to distribution and exhibition. For him, filmmaking did not end with the making of a film; he traveled extensively to create a network of filmmakers, activist groups, and campuses in order to show films and open up new horizons for youngsters and activists alike. He was not averse to new technologies. As an activist involved in political and environmental issues, he sensed that video technology was more mobile, affordable and accessible than the celluloid.

He took on to the VHS format to make films such as 'Save the Western Ghats March: The Kerala Experience' (1987). 'No to Dams A Pooyamkutty Tale' (1988) and 'Ellam Asthamikkum Munpe' (1989). These films dealt not only with issues and problems, but also with pro-active and affirmative action by various movements, in the process probing into some very vital areas of Kerala society, environment and politics.

After this brief but vibrant stinct of activism in Kerala, he left for the Gulf to work as an education Promotion Consultant for British Council. His aim was to earn enough money to buy necessary equipment to engage in independent filmmaking back home. His first major film was 'Chaliyar?: The Final Struggle' (1999), which he co-directed with P. Baburaj, about the people's struggle at Mavoor against the pollution caused by Gwalior Rayons factory.

The film earned Special Mention at the Mumbai International Film Festival 2000 and The Bronze Tree Award, Vatavaran 2002. It was followed by 'Kanavu' (2001) on a tribal children's commune in Wayanad. In the coming years he made films in association with Baburaj at regular intervals: "The Bitter Drink' (2003) on the Plachimada struggle received international acclaim and was shown in various festivals in India and abroad. His next film, was on the police firing against Adivasis at Muthanga titled 'Evicted from Justice-a video report on Muthanga massacre' (2003)

'Only An axe Away' (2005) was about the Pathrakadavu project. This film won the Jury Prize, MIFF 2008. His next film '2000 Days and a Dream' (2006), co-directed with Baburaj, returned to Plachimada to take stock of the people's resistance at Plachimada which was going on for more than three years. This film also received acclaim at the 10th MIFF.

Video essays: Next was a video essay on his favourite film maker, John Abraham – 'Your's Truly John' (2008), which was shot over several years and involved hundreds of people who were associated with John in various ways. During the next year he made another film about the struggle for land at Chengara "To die for land-the ultimate sacrifice'. Some of his projects are in different stages of completion: one is a follow up on the Mavoor struggle. "The River which flowed back', about Chaliyar river which was flowing back to its pre-pollution days. Another one was about the pollution caused by the gelatine factory near Chalakudy.

The touring festival of documentaries and short films that he organized on his own-Nottam-was a rare and pioneering one of its kind, a forerunner of the video festivals that were to follow later. Te Vibgyor at Thrissur, an annual film festival that showcases film on socio-political issues, was, in fact, a more organized form of Nottam, and Sarat was the driving force behind it.

With the departure of Sarat, we have a lost a dear friend and comrade, companion and chronicler, who traveled with us yet gave us added dimensions to our strides and stumbles. •

मधुर संकल्पों को पीछे छोड़कर

के.वी.षाजी

उन प्रतिरोधों को जिन्हें मुख्य धारा के माध्यमों ने नहीं देखा, है, परवाह नहीं की है, डोक्युमेन्टरियों के द्वारा संसार के समक्ष प्रस्तुत करके कालकवलित हुए हैं शरतचन्द्र। सिनेमा कैमरा को सामूहिक हथियार बनाके भारत के प्रश्नाधिष्ठित संग्रामों को उत्तोजित करते हुए डोक्युमेंन्टरी संविधायक श्री. शरतचन्द्र केवल यादों में समा गए। वे अब काल की यवनिका के पीछे छिप गए हैं जबकि स्वत्वाधिकारों केलिए जहाँ-जहाँ संग्राम हुए, उन सब का अपने कैमरा में चित्र लेकर टटे रहे थे। छोटे-छोटे सिनेमाओं को बडी-बडी बातों केलिए उन्होंने काम में ला दिया था। ऐसे रास्ते शरतचन्द्र के सामने नहीं थे जहाँ से होकर वे चलते थे। लेकिन उनके स्थान पर आज एक-दूसरा अब नहीं है जो सचेतन संग्रामों को कार्यशील कर सकता है। अब ऐसा कोई नहीं है जो शरत्चन्द्र का सान्निध्य संग्राम क्षेत्रों में उत्तेजना भर सकता है। शरत्चन्द्र की डोक्युमेंन्टरी जो कर सकी है डोक्युमेन्टरी के क्षेत्र में वह आखिरी थी। संधर्षशील उत्तोजित मानसिकता को निःशेष करके शरतचन्द्र अप्रत्यक्ष हुए। शरतचन्द्र का डोक्युमेन्टरी जीवन पच्चीस वर्षों का था। जब वे रियाद के ब्रिटीश कौणसिल की अफसरी छोडकर बाहर निकले तब उनके कंधों पर एक डोक्यूमेन्टरी संविधायक केलिए आवश्यक धन समाहित रहा था। उसके साथ असंख्य विश्वोत्तर सिनेमा कैसटों का बंडल भी था जिन्हें तब तक किसी मलयाली को देखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था।

श्री. शरतचन्द्र की यात्रा ऐसे संग्राम क्षेत्रों से होकर चली जिनका सामना करने को कोई मलयाली साहस नहीं करता था। पश्चिम पर्वत पंक्तियों को, आधुनिक प्रकृति विरोधी विकास-आयोजन के चंगुल से बचाने के लिए चलेसंघर्षों में शरतचन्द्रन भाग लेते थे। शरत बराबर गाते थे: "यहाँ पहले जंगल था, जंगल कितना गंभीर था"। यह गीत उसी पश्चिमी घाट की यात्रा में गाते थे। सिनेमा के आधुनिक तरीके से शरत् को सख्त विरोध था। कष्ट सहनेवाले दुःखी जनों की समस्याओं को सिनेमा का विषय बनाना चाहते थे वे। उनकी वेदना को आत्मसात कर उन्हें सहारा देते हुए यहाँ से वहाँ तक चलते-दौडते रहना उन्हें प्रिय था। इसी के चस्के में तल्लीन रहे थे। यह दौड़-धूप गत तीन दशाब्दियों से निरन्तर चलती थी।

मावूर प्रदेश में जहाँ चालियार नदी को कालिन्दी बनाकर मनुष्य को और प्रकृति को, ख्रासकर सरकार को सिरदर्द देकर संघर्ष का अवसर बनाते रहने वाला ग्रासीम कम्पनीवाले आसपास के लोगों को केंसर रोग से पीडित करा रहे थे, तब शरतचन्द्रन वहाँ गये और शुद्ध पानी देकर ग्रामवासियों को बचाने केलिए अपने मित्र बाबुराज के सहयोग से कैमरा चलाने लगे। वहाँ के लोगों का कठोर दुःख बाहरी लोग जानते थे शरत् और उनके प्रयत्न के कारण। इस प्रथम प्रयत्न के पश्चात् और उसपर विजय पा लेकर शरत् का प्रयत्न उसी विषय को दूसरे प्रकार से प्रकट करना था कि 'पीछे को बहनेवाली नदी' के नाम से। इसी प्रयत्न के बीच उनकी मृत्यु हुई थी।

जो कठोर फिर भी जन प्रियकाम शरतचन्द्र करते थे उसे करने केलिए कोई मलयाली साहस नहीं करता था। उन्होंने सिनेमा दिखाने केलिए सिनेमा तैयार नहीं किया था। शरत के कैमरा में तैयार हुए सिनेमा चित्र ऐसे थे जो श्री.के.पी.शशी और पी.बाबुराज जैसे अपने मित्रों को अपनी ओर आकर्षित करने लायक रहे थे। उन लोगों में जो विश्वास एवं आत्म धैर्य बद्धमूल हो गए वे जन सामान्य केलिए आकर्षक एवं अनुकरणीय रहे थे।

जब सरकारी अधिकारियों ने मुतंगा के आदिवासी लोगों के जीवन को नामावशेष किया तब शरत्चन्द्र और सुरेन्द्र दोनें ने मिलकर एक सिनेमा जो बनाया वह अधिकारियों के विरुद्ध ऊँगली उठानेवाला था। 'साइलेन्टवाली योजना' का नाम बदलकर 'पात्रक्कटवु योजना' नाम स्वीकार किया गया, तो पश्चिम धाटी योजना के समरनायक को वहाँ जाना ही पडा। उस सिलसिले में पात्रक्कटवु योजना सफल नहीं बनी और इस ओर शरत् और बाबुराज के सिनेमा का दायित्व निर्णायक साबित हुआ। 'एक परशु की दूरी' नाम था उस सिनेमा का। इस प्रकार शरत्चन्द्र कष्ट सहिष्णुओं के रोदन को शान्त करने केलिए चलते रहे। प्लाच्चिमटा में कोक्काक्कोला नामक आगोलभीम से टक्कर लगानेवाले आदिवासी लोगों के साथ ख़डे होकर शरत् ने भी पूरा साहस दिखाया। प्लाच्चिमटा के संग्राम का नेतृत्व जिस मैलम्मा ने लिया था उस माता के साथ शरत् का घनिष्ठ व्यवहार एक सिनेमा प्रवर्तक का नहीं था। देश भर होनेवाले सत्याग्रह संग्रामों में भाग लेनेवाली माताएं और गरीब बहिनें शरत्चन्द्र को स्वजन रही थीं। असीम प्यार का निष्काम वितरण करनेवाला शरत् एक श्रेष्ठ सिनेमा आक्टिविस्ट थे। शरत्चन्द्र और बाबुराज दोनों ने मिलकर जितने सिनेमा बनाये थे वे सब सफल एवं संग्रामों में विजयी बने थे। 'चालियार' 'प्लाच्चिमटा', 'पात्रक्कटवु', 'चेडडरा' इस प्रकार शरत् की डोक्कमेंटरियाँ आगे बढ़ती हैं। उन विजयाघोषों का बाकी-पत्र (अवशेष-चिन्ह) रहा उनका तिरस्करण। शरत्चन्द्र ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर जितने सिनेमा तैयार किये हैं वे सब सिनेमाप्रेमियों में राष्ट्रीयता-बोध संजात किया। केरल की फिल्मी स्वोसाइटि जहाँ एक ही प्रकार के चित्र दिखाकर संतुष्ट हो रही थी, वहाँ शरत् ने राष्ट्रीयप्रश्नाधिष्ठित डोक्युमेंटरी लिए ग्राम-जनपदों को सचेत किया।

शरत् 'नोट्टम' नामक सिनेमा संविधान लिए संचार करने वाले सिनेमा 'फेस्टिवेल' का आयोजन ग्राम-ग्रामांतरों में किया करते थे। हर भीड को उन्होंने अपने सिनेमा दिखाने के दर्शक माने थे। संचालक् लोग जहाँ नींद में पडे रहे थे, तब शरत्चन्द्र अपना सिनेमा बंडिल धामे रात में गाडी की प्रतीक्षा में सडकों में रहते। कितनी रातें सडकों में काटकर अगले मंच केलिए यात्रा करते। इन सुप्त सड़कों को सचेतन बनाने केलिए अब शरत् नहीं है। जगते रहनेवाले समरक्षेत्र, सिनेमा की भीड, अनगिनत मित्र शरत् की कल्पित पुनः- यात्रा की प्रतीक्षा में हैं।

यहाँ हमने कितने सोने के बीज बोये।
हमने लहू से उनके जड़ भिगोये
शरत्चन्द्र का यह गीत हमारे कोनों में गूँज रहा है

[जनपथ से साभार: मूललेख्क-के.वी.षाजी, अनुवाद-आर राजपुष्पम]

पंत और विनोबा के विचारों का तुलनात्मक अनुशीलन

डॉ. पुष्पेद्र दुबे

भारतीय साहित्य की आंतरिक एकरूपता को उजागर करने में तुलनात्मक अनुशीलन एक महत्वपूर्ण और कारगर उपाय है। भारत में वैचारिक भावभूमि के समान होने का ही परिणाम है कि उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक कितने ही झंझावातों के बाद भी आंतरिक एकता कायम है। ऊपरी तौर पर भले ही भारत अनेक प्रकार से खण्डित दिखाई देता हो, परंतु यहां के साहित्य के भीतर बहने वाली अंतर्भावधारा एक ही है, जिसे देख-सुनकर अनेक लोग दांतों तले उंगली दबाने पर विवश हो जाते हैं। मध्यकालीन संत साहित्य में ऐसे अनेक अवसर उपलब्ध हैं जहां एक ही प्रकार के विचार और भाव भिन्न-भिन्न कालों में विविध प्रकार से संतों ने व्यक्त किए हैं। कई बार यह देखकर आश्चर्य में पडा जाना पडता है कि दो व्यक्ति जिन्होंने कभी एक-दूसरे को देखा भी नहीं है फिर भी दोनों के विचार और भावों में इतनी अधिक समानता कैसे है। हिन्दी के मूर्धन्य कवि सुमित्रानंदन पंत और बीसवीं सदी के महान संत आचार्य विनोबा भावे के साहित्य संबंधी विचारों का अनुशीलन करने पर अनेक प्रकार की समानताएं दिखाई देती हैं।

पंत ने चिदंबरा की भूमिका में अपने काव्य विकास का विस्तार से विवेचन किया है। उसी में उन्होंने लिखा है, "वास्तव में हमारे साहित्य में जीवन-यथार्थ की धारणा इतनी एकांगी, खोखली तथा रुग्ण हो गई है कि हमें शोषित, जर्जर और लघु मानव के ऋण चित्रण में ही कलात्मक परितृप्ति मिलती है। हम स्वस्थ मानवता की दिशा की ओर दृष्टिपात नहीं करना चाहते, क्योंकि वहां हम अपनी मध्यवर्गीय कुंठाओं से ग्रस्त आत्मपराजित, क्षुद्र, संकीर्ण, द्वेषदग्ध, काममूढ़ जीवन के लिए सहानुभूति नहीं जगा पाते, जिसे युग जीवन तथा कला का परिधान पहनाकर दूसरों के करुणा कण प्राप्त करने के लिए हम आत्मविस्तार का माध्यम बनाना वाहते हैं, जो नव लेखन का दृष्टिकोण है, जो सद्यः और क्षणिक की अंगुली पकडे हुए है। अथवा हम राजनीतिक आवेगों एवं शक्तिमद की आकांक्षा से प्रेरित होकर आलोचना के नाम में मतवाद तथा गाली-गलौज़ का अंधड उठाकर उसमें साहित्यिक मूल्यों को, आमूल, वृक्षों की तरह उखाड फेंकना चाहते हैं, जो हमारा प्रगतिशील दृष्टिकोण दोनों ही में धन यथार्थ की धारणा का अभाव है-ऐसा धन या भाग यथार्थ जो आज के विश्वव्यापी ह्रास से मानव जीवन को ऊपर उठाकर उसे शांति, प्रकाश तथा कल्याण के भुवनों तक ले जा सके।"[1]

यह हमारे जमाने की चुनौती है कि साहित्य और साहित्यकार स्वयं को पुनः टटोलें। संत विनोबा के विचार यहां दृष्टव्य है, "जमाना किधर जा रहा है, किधर जाना चाहिए, इसका कोई खास भान साहित्यिकों को नहीं दीखता है। वे तो उससे उल्टी दिशा में ही जा रहे हैं। जगह-जगह अपने आसपास छोटी-मोटी समयस्याएं है और छोटे मोटे दुःख दीख पड़ते हैं, उनमें साहित्यिक उलझ जाते हैं और उसके कारण उस पार का दर्शन उन्हें नहीं होता। उनमें करुणा होती है, लेकिन उसकी गहराई बहुत कम होती है। कुछ साहित्यिक मजदूरों का वेतन बढ़े, उतने में ही अपनी करुणा समाप्त कर लेते हैं। कुछ की करुणा कुटुंब नियोजन में ही समाप्त हो जाती है। ऐसे छोटे छोटे कामों में अपनी कारुण्यवृत्ति को, सहानुभूति को - जो कवि हृदय के लिए बहुत आवश्यक होती है - वे समाधान दे लेते हैं और छोटे-छोटे मसलों में उनका चित्त गिरफ्तार हो जाता है।"[2]

दोनों उद्धरणों की तुलना से यह पता चलता है कि साहित्य और साहित्यकारों को लेकर उनके द्वारा व्यक्त की गई विधाएँ जायज हैं। आज का साहित्यकार स्वकेंद्रित होकर अपने आप में इतना उलझ गया है कि अपनी करुणा का विस्तार नहीं कर पा रहा है। इसके परिणामस्वरुप विज्ञान के जमाने में जिस प्राचीन आध्यात्मिकता के साथ समन्वय स्थापित होना चाहिए था वह नहीं हो पा रहा है। सुमित्रानंदन पंत ने इसे आधुनिक युग की समस्या माना है। वे लिखते हैं, "मैंने भौतिक आध्यात्मिक, दोनों दर्शनों से जीवनोपयोगी तत्वों को लेकर, जड़ चेतन संबधी एकांगी दृष्टिकोण का परित्याग कर व्यापक सक्रिय सामंजस्य के धरातल पर, नवीन लोक-जीवन के रुप में, भरे-पुरे मनुष्यत्व अथवा मानवता का निर्माण करने का प्रयत्न किया है, जो इस युग की सर्वोपरि आवश्यक समस्या है।"[3] वहीं विनोबाजी लिखते हैं, "मैं अपने शिक्षाकाल में विज्ञान का अध्ययन करना अधिक पसंद करता था। वह मेरा प्रिय विषय था, लेकिन आध्यात्मिक साहित्य के प्रति मेरा विशेष आकर्षण और झुकाव था। इस प्रकार मेरे मन में अध्यात्म और विज्ञान दोनों मिलकर एक हो गए। मेरी दृष्टि में दोनों समान

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ३०-वाँ वार्षिक महोत्सवः अकादमी पुरस्कार, 22-9-2010 को

I. डा. सी.जे.प्रसन्नकुमारी - सरकारी महिला कालेज
II. श्रीमती आर.आई. शांति - सरकारी महिला कालेज
III. के.सी. अजयकुमार - कोरपरेशन बेंक, मंगलोर
IV. श्री. मुहम्मद सलीम खान - करुनागप्पल्ली

कालेज के छात्रों के पुरस्कार प्रथम पुरस्कार एक हज़ार रुपये द्वितीय पुरस्कार पाँच सौ रुपये

I. सिमी एस. I M.A., Kerala University
II. लिजी एल. II M.A., Kerala University
I. अनु वी.एस. - एन.एस.एस. महिला कोलेज
II. रश्मी. पी. - एन.एस.एस. महिला कोलेज
I. सूर्या के - आल सेंट्स कालेज
II. लक्ष्मी जी - आल सेंट्स कालेज
I. श्रीलक्ष्मी एस.एस. - सरकारी महिला कालेज
II. पार्वती चन्द्रन - सरकारी महिला कालेज
I. दीपा वी.आर - हिन्दी प्रशिक्षण विद्यालय
II. सुभाष पी. - हिन्दी प्रशिक्षण विद्यालय
I. नौम्या - केरल हिन्दी प्रचार सभा
II. सुजिता लक्ष्मी - केरल हिन्दी प्रचार सभा

हैं और दोनों का अर्थ एक ही है। एक का विषय विशेषरूप से सृष्टि का बाह्य पहलू है तो दूसरे का विषय आंतरिक। ये दोनों मिलकर हमारे अंदर समग्र विश्व प्रस्तुत करते हैं।"[4]

इस समग्र विश्व की पहचान और अनुभूति आज के वैज्ञानिक जीवन की आवश्यकता बन चुकी है। इसके अभाव में ही इस सुंदर पृथ्वी पर तमाम तरह की समस्याएं दिखाई दे रही हैं। जब दुनिया के प्राचीनतम कवियों को इस बात का भान नहीं था कि पृथ्वी कितनी बड़ी है, तब भी उन्होंने अपने हृदय का विस्तार किया और मानव एकात्मकता के गीत गाए। जब आज विज्ञान ने समुद्र की अतल गहराइयों, आकाश की अनंत ऊंचाइयों का स्पर्श कर आकाश में अपने हाथों से उपग्रह फेंक दिए हैं, तब देशों की क्षुद्र सीमाओं में आबद्ध मनुष्य अपने मन से ऊपर नहीं उठ पा रहा है। इसे सुमित्रानंदन पंत ने इस तरह व्यक्त किया है, "इस युग के विक्षोभ का मुख्य कारण है मानव जीवन के ऊर्ध्व तथा समतल संचरणों में सामंजस्य अथवा संतुलन का अभाव। आज हमें भूत-अध्यात्म, यथार्थ-आदर्श संबंधी अपनी पिछली धारणाओं को अधिक व्यापक बनाकर उन्हें एक-दूसरे के निकट लाना है। आज के बडे राष्ट्रों को, जो भू जीवन के विकास तथा उन्नयन को अवरुद्ध किए हुए हैं, वैज्ञानिक चेतना या मानवीय जीवन यथार्थ का प्रतिभू मानना हमारा भ्रम है। वे अभी धरती की प्राचीन ऐतिहासिक बर्बरता ही का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और विज्ञान को जीवन निर्माण या मनोविकास का माध्यम बनाने के बदले, उसके पंखों के ताप में आणविक डिब्बों एवं विनाश के विस्फोटकों को लेकर, अपनी ऋण सामर्थ्य का नग्न प्रदर्शन कर रहे हैं। जिस प्रकार कभी भारतवर्ष अपनी आध्यात्मिक शक्ति के सम्मोहन से दिग्भ्रांत हो गया था, उसी प्रकार आज के शिखर राष्ट्र भौतिक क्षमता से मदोन्मत्त हो विश्व जीवन एवं मानवता को विनाश की ओर स्पर्धा कर रहे हैं। मुझे मानव चेतना पर विश्वास है, वह इस अणु संहार के नृशंस हिंस्र नाटक को अवश्य ही नवीन निर्माण तथा रचना मंगल की दिशा एवं भूमिका देकर मानवता की प्रगति का द्वार उन्मुक्त कर सकेगी।" [5]

वही विनोबा लिखते हैं, "मनुष्यरुपी पक्षी के दो पंख हैं - आत्मज्ञान और विज्ञान। इन दोनों का ठीक ढ़ंग से समत्व रखकर विकास करने से ही मानव का समाधान होगा।... विज्ञान ने इतना सुख विस्तार किया है, जितना पहले कभी नहीं हुआ था। आज मनुष्य उसके पीछे दौड़ रहा है, फिर भी सुख और समाधान अधिक है ऐसा हम नहीं कर सकते। सुख-विस्तार तो किया है, पर अंतःसमाधान पाने की दृष्टि और अवकाश उसे आज नहीं है। इसलिए उसका विकास एकांगी हो रहा है। इसका कारण यही है कि हम आत्मा की तरफ ध्यान कम दे रहे हैं और शरीर का ध्यान बढ़ गया है। बिना विज्ञान के संसार में कोई काम ही नहीं हो सकेगा और बिना आत्मज्ञान के विज्ञान को ठीक दिशा नहीं मिलेगी। मुझे विश्वास है कि आत्मज्ञान के साथ जहां विज्ञान का संबंध आ रहा है, वहां प्रयोग करने से, प्रारंभ में शायद कुछ हानि उठाने के बाद, मनुष्य ठीक राह पर आ जाएगा।"[6]

इस ठीक राह पर आने में साहित्यकार और वैज्ञानिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जिस प्रकार आज का विज्ञान एक देशीय नहीं रह गया है, उसी प्रकार आज का साहित्य भी किसी एक देश की सीमा में बंधा नहीं रह सकता। मनुष्य मात्र समान समस्याओं से जूझ रहा है। पूरा विश्व एक ग्राम में बदल चुका है। पारिवारिक समस्याएं विश्व परिवार में दिखाई पड़ रही हैं। दोनों का हल अलग-अलग स्तर पर नहीं हो सकता। पंत इसका अनुभव करते हुए लिखते है, "आज के युग का प्रश्न केवल भारतीय का एकदेशीय आध्यात्मिकता या संस्कृति का नया संस्करण प्रस्तुत करना नहीं है, जैसा मध्ययुगों में रहा है, आज समस्त मानवता तथा विश्वजीवन को एक सक्रिय, जीवनोपयोगी, आध्यात्मिक चेतना तथा सांस्कृतिक पीठिका प्रदान करना है। आने वाला मानव निश्चय ही न पूर्व का होगा, न पश्चिम का। वह देशों की सीमाओं एवं विभेदों को अतिक्रम कर काल के शिखर की ओर आरोहण करने को उत्सुक होगा। आज की बाह्य वास्तविकता बौनी विकृतियों से मुक्त, उसके भीतर, एक अंतर वास्तविकता एवं अंतरचेतना का उदय तथा विकास होगा। वह विज्ञान को अपना उपयुक्त वाहन बना सकेगा। वही, काल के हृदय कमल में स्थित, कालविद् अत्याधुनिक मानव होगा-जिसे धारण कर धरती सूर्य की परिक्रमा करने में गौरव का अनुभव करेगी।"[7]

महर्षि अरविंद ने जिस अतिमानस की बात कही है, वह मन से ऊपर उठे हुए समाज के पथ प्रदर्शकों के बारे में ही है। आज मन के स्तर पर समस्याओं को सुलझाना संभव नहीं है। वैज्ञानिकों ने जितनी साधना करके संहारक अस्त्र-शास्त्रों की खोज की है, उससे कहीं ज्यादा गहरे साहित्यकारों को उतरना होगा। निर्माण कुछ ज्यादा ही बलिदान मांगता है। मनुष्य जीवन के पथ को आलोकित करने वाले मंत्र 'ग्रामस्वराज्य' और 'जयजगत' की साधना नये जमाने की मांग है। आज साहित्य 'ब्रॉडकास्ट' हो रहा है, उसके विपरीत साहित्यकारों पर 'डीपकॉस्त' करने की जवाबदारी है। समस्याओं के मूल में जाकर उसके कारणों को वैज्ञानिक तरीके से हल करना साहित्यकारों के सामने मुख्य चुनौती है।

"कइयों को लगता है कि आज विज्ञान खूब बढ़ गया है। इसलिए अब आत्मज्ञान की कोई जरुरत नहीं है। लेकिन यह भ्रांत धारणा है। जितनी ही विज्ञान की शक्ति बढेगी, उतनी ही आत्मज्ञान की आवश्यकता भी बढ़ जाएगी। जब विज्ञान-शक्ति आयी है, तो हमें आध्यात्मिक क्षेत्र में गहरा डूबना होगा। प्राचीन काल के व्यक्ति जितने गहरे डूबे थे, उससे भी अधिक गहराई में जाना होगा।... जब मैं सोचता हूँ, तब ये सारे देशों की सीमाएं, भाषा की सीमाएं, धर्म, पंथ आदि सबकी चर्चा बिलकुल निःसार मालूम होती है।"[8]

विनोबा और सुमित्रानन्दन पंत दोनों की विज्ञान को अपना उपयुक्त वाहन बनाने की बात पर जोर देते हैं। यह विवेक को जाग्रत किए बिना नहीं हो सकेगा। हिंसा रुपी दानवी इस पृथ्वी पर बहुत समय से राज कर रही है। विज्ञान ने पूरी दुनिया के अस्तित्व के सामने संकट उपस्थित कर दिया है। विज्ञान न तो नैतिक होता है न अनैतिक। वह तो इसके प्रयोगकर्ताओं को ही विचार करना है कि वह विज्ञान को मनुष्य समाज का तारक बनाना चाहता है या मारक। तारक दृष्टि देने का काम साहित्यकारों का है। जिस ओर विनोबा और सुमिद्रानंदन पंत दोनों ने इंगित किया है अब साहित्यकारों को अपने चिंतन में वैज्ञानिकता और आध्यात्मिकता दोनों तत्वों का समावेश करने की तीव्र आवश्यकता है।

डॉ. पुष्पेंद्र दुबे, डी-३७, सुदामानगर, इन्दौर.

महान समाज सुधारक आचार्य रामानुज

बद्रीनारायण तिवारी

भारतीय संस्कृति की पताका फहराने वाले 11 वीं शताब्दी के संत शिरोमणि समाज सुधारक श्री रामानुज आचार्य का जन्म दक्षिण भारत के तमिलनाडू प्रदेश के श्री. पेरुम्बुदूर (भूतपूरी) में हुआ था बैशाख्र शुक्ल स्म्वत् 2066 (30 अप्रैल 2006 ई.) को उनका 662 वर्ष पूर्ण हो रहा है। प्राचीन काल से इस पुण्य भूमि में जन सामान्य को भक्तिमार्ग दिख्राने वाले अनेक संत, गुरु एवं आचार्य हुए हैं। इनमें श्री रामानुजाचार्य का प्रमुख्र स्थान है। उस समय सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक तथा धार्मिक लोग हतोत्साहित हो गये थे।

ऐसे संक्रमण काल में समय-समय पर भारत को एका के सूत्र में बाँधने वाले देश के विभिन्न क्षेत्रों - केरल के शंकराचार्य, तमिलनाडु के रामानुजाचार्य, महाराष्ट्रा के समर्थ गुरु रामदास, आंध्र के बल्लभाचार्य, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु, स्वामी विवेकानन्द और गुजरात के संत तुकाराम एवं स्वामी दयानन्द आदि महापुरुषों को क्या किसी भाषा-भाषी प्रदेश विशेष का माना जा सकता है? वे भौतिक रूप से देश के ही नहीं विश्व में "सर्वेभवन्तु सुख्रिनः सर्वे सन्तु निरामयः" मानव कल्याण के उद्घोषणकर्ता रूप में मान्यता मिली।

रामानुजाचार्य भारत के पहले सुधारक आचार्य थे जिन्होंने भेदभाव तथा जातिवाद को चुनौती दी। वह भी उस विषमयुग में जब धार्मिक कट्टरता-अंधविश्वास पराकाष्ठा के रूप में था। धर्म के ठेकेदार धर्म को एक रहस्य और जनसाधारण के लिए असंभव बनाये हुये थे तथा विरोधाभास होने पर लोगों की आँख्रें तक निकालने का क्रूरतम घृणित कार्य करते थे। स्वयं श्री रामानुजाचार्य के दो शिष्यों को चौल वंश के शैवराजा ने अन्धा करवा दिया था। इन विषम परिस्थितियों के मध्य रामानुज ने धर्म की कट्टरता को दूर करते हुए उसे जनसामान्य में बोधगम्य बनाया। इस सम्बन्ध में एक प्रेरणादायी रोचक प्रसंग है। गोष्ठी पूर्णता नामक एक कट्टर पण्डित रामानुज को पावन द्वय मंत्र प्रदान करते समय बताया कि यह मोक्षदायक मंत्र है और इसे गुप्त रख्रना। किन्तु रामानुज उनके क्रोध की परवाह न करते हुये उसी समय ऊँचे गोपुरम पर चढ़ गये। किन्तु सर्वजनहितार्थ उस गुप्त पवित्र द्वय मंत्र को गोपुरम् के शिख्रर से जन सामान्य को मोक्ष प्राप्ति हेतु जोर से उच्चारण करते हुए प्रेषित कर दिया। इसके पीछे मूल भावना थी कि यदि स्वयं (एक व्यक्ति) नरक में जाने से जनता जनार्दन की मोक्ष प्राप्ति होगी-उसी को रामानुज ने साकार किया। उन्होंने जातिवाद अथवा क्षुद्र-उच्च की भावना को रंचमात्र प्रश्रय नहीं दिया। उनके अतिनिकटस्थ स्वामी कांचीपूर्ण ही चतुर्थ वर्ण के थे। तथा महापूर्ण स्वामी जिन्होंने रामानुज का पंच संस्कार सम्पन्न किया, क्षुद्र जाति के थे।

रामानुज वर्तमान गाँधी दर्शन का सूत्रपात ग्यारहवीं शताब्दी में ही कर दिया था। गाँधी जी वस्तुतः परम वैष्णव थे उनका प्रिय भजन "वैष्णव जण तो तेणे कहिये, जे पीर पराई जाणे रे" के अनुरुप ही रामानुज की भक्तिधारा को संत शिरोमणि रामानन्द तथा संत रैदास ने उत्तर भारत में सतत् प्रवाहित किया। रामानुज ने अद्वैत एवं द्वैत दर्शन के मध्य विशिष्टाद्वैत दर्शन की स्थापना की। महान शिक्षाविद एवं दार्शनिक सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने अपने भारतीय दर्शन ग्रन्थों में इस रामानुज दर्शन को प्रमुख्रतापूर्वक मान्यता भी प्रदान की। जर्मनी के प्रमुख्र संस्कृत विद्वान मैक्स मूलर के शब्दों में-

"रामानुज ने मनुष्यों को एक भगवान दिया। धर्म को उसकी ख्रोई आस्था वापस की..."

बद्रीनारायण तिवारी, मानस संगम, महाराज प्रयाग नारायण मन्दिर, (शिवाला) कानपूर २०५१००१

एस.बी.टी. हिन्दी पुरस्कार

मौलिक साहित्य - (कहानी - 'दूसरा पहलू और अन्य कहानियाँ' - प्रोफसर पी.कृष्णन, कन्नूर)

शोधग्रंथ - मन्नू भण्डारी का रचना संसार डा. षीना ईप्पन, हिन्दी रीडर, कोषंचेरी कोलेज

श्री अक्षरगीता

डॉ. वीरेन्द्रशर्मा

श्रीभगवान बोले-

महाबली फिर से यों सुन लो
परम वचन तुम ये मेरे
तुम्हें कहूँगा हित-इच्छा से
हो अतिशय प्रिय तुम मेरे.

ऋषि महान भी नहीं जानते
प्रगटन भी मेरा सुरगण
महर्षियों एवं देवों का
मूलभूत मैं ही कारण.

आज अनादि जो मुझे जानकर
लोक-महेश जानता है
सभी प्राणियों में ज्ञानी वह
पाप-मुक्त हो जाता हैं.

सत्य, अहिंसा, समता, दम, शम,
बुद्धि, ज्ञान, उत्पत्ति प्रलय,
क्षमा, दान, यश अपयश एवं
असंमोह, भय और अभय

सुख, दुःख तुष्टि तपस्या के ये
सभी प्राणियों के जो भाव
नानाविधि होते हैं मुझसे
मेरा उनमें प्रगट प्रभाव.

ऋषि महान सातों ही एवं
पूर्व चार, मनु जितने हैं
मानस-भव, भावार्पित मेरे
जिनकी प्रजा लोक में हैं.

मेरा वैभव और योग जो
सम्यक् इसे जान लेता
अविचल भक्तियोग से जन वह
निः संदेह युक्त होता.

मैं ही कारणमूल सभी का
मुझसे सभी प्रवृत्त होते
यही मानकर भावसमन्वित
बुद्धिमान मुझको भजते.

मुझमें चित लगा, अर्पण कर
प्राण, भक्ति चर्चा करते
नित्य परस्पर बोधन करते
करते रमण तुष्ट होते.

नित्ययुक्त उन भक्त जनों को
मुझे प्रीति से जो भजते
बुद्धियोग वह देता हूँ मैं
जिससे मुझे प्राप्त करते.

मैं उनका अज्ञानजनित तम
ज्ञान-दीप द्वारा भास्वर
कृपा हेतु करता विनष्ट हुँ
आत्मभाव स्थित होकर.

अर्जुन बाले-

परमब्रह्म हैं परमधाम हैं.
पावन परमदिव्य हैं आप
आदिदेव हैं व्यापक, अज है.
शाश्वत परमपुरुष हैं आप

ऋषिगण सभी असित देवल ऋषि
व्यास तथा कहते ऐसा
देवों के ऋषि नारद एवं
स्वयं आप मुझसे जैसा.

सब कुछ यह मैं सत्य मानता
मुझसे जो कहते केशव
नहीं आपके व्यक्तरूप को
भगवन, जानें सुर, दानव.

हे पुरुषोत्तम प्रभो जगत के
सर्वप्राणिसृष्टा देवेश
स्वयं जानते आत्मरूप को
आत्मरूप से हे भूतेश.

स्वयं आप सम्यक् कह सकते
अपने दिव्य विभूति-स्वरूप
जिनके द्वारा व्याप्त आपका
सब लोकों में पावन रूप.

योगेश्वर मैं जानूँ कैसे
रूप आपका कर चिंतन
चिंतन करुँ आपका कैसे
किन किन भावों में भगवन.

योग और वैभव अपने का
कहें कृष्ण, फिर विस्तृत रूप
तृप्ति न होती मेरी, सुनकर
वचन आपके सुधा-स्वरूप.

श्रीभगवान बोले-

अस्तु, पार्थ मैं तुम्हें कहूँगा
आत्मविभूति दिव्य का सार
सब कुछ ही संक्षिप्त रूप मैं
है अनंत मेरा विस्तार.

अन्तः स्थित रहता हूँ सबके
आत्मरूप होकर मैं ही
सभी प्राणियों मैं हूँ अर्जुन,
आदि मध्य इति भी मैं ही.

मैं ही विष्णु अदितिपुत्रों में
अंशुमानरवि द्युतिगण में
नक्षत्रों में शशि भी मैं ही
हूँ मरीचि मैं मरुतों मैं.

वेदों में हूँ सामवेद मैं
वासव हूँ मैं देवों में
सभी इन्द्रियों में मन हूँ मैं
प्राणशक्ति सब भूतों मैं.

रुद्रों में शंकर हूँ मैं ही
हू कुबेर सब यक्षों में हूँ
वसुओं में पावक हूँ मैं ही
हू सुमेरु सब शैलों में.

पुरोहितों में मुख्य मुझे ही
पार्थ, बृहस्पति तुम जानों
कार्तिकेय सेनापतियों में
सरित मध्य सागर मानो.

महर्षियों में भृगु हूँ मैं ही
शब्दों में एकाक्षर मैं.
यज्ञों में जपयज्ञ, अचल में
पर्वतराज हिमालय मैं.

सब वृक्षों में पीपल हूँ मैं
नारद हूँ सुरऋषियों में
गंधर्वों में पार्थ, चित्ररथ
मुनि में कपिल सिद्धगण मैं.

अश्वों में, उद्भूत सुधा-संग
उच्चैश्रवा मुझे जानो
श्रेष्ठगजों में ऐरावत हुँ
मनुजों में नरपति मानो.

मैं ही वज्र आयुधों में हूँ
कामधेनु हूँ गायों में
विषधर वासुकि सर्पों में हूँ
कामदेव हूँ प्रजनन मैं.

नागों में हूँ शेषनाग मैं
जलचर-अधिप वरुण भी मैं
पितर अर्यमा पितरों में हूँ
यम शासनकर्त्ताओं में.

हूँ प्रह्लाद सभी दैत्यों मैं
गणकों में हूँ मैं ही काल
हूँ मृगेन्द्र मैं सब पशुओं में
विहगों में हूँ गरुड़ विशाल.

पवन सभी पावन में हूँ मैं
शस्त्रधारियों मैं हूँ राम
मकर मत्स्यगण में हूँ एवं
नदियों में गंगा अभिराम.

अखिलसृष्टि का आदि मध्य मैं
अर्जुन, तथा अंत भी मैं
ब्रह्मज्ञान विद्याओं में हूँ
वाद तत्वनिर्णायक मैं.

सभी अक्षरों में अकार हूँ
अक्षयकाल तथा हूँ मैं.
द्वन्द्वसमास समासों में हूँ
विश्वरूप धाता हूँ मैं.

मृत्यु सर्वहर भी तो मैं ही
हूँ उत्पत्ति-हेतु भी मैं
नाही कि श्री, कीर्ति, वाक्, धृति
मेधा, क्षमा, स्मृति भी मैं.

गीति-ज्ञान में बृहत्साम हूँ
छन्दों में गायत्री मैं
मासों मैं हूँ मार्गशीर्ष मैं.
ऋतुओं में हूँ मधुऋतु मैं.

द्यूत सभी छलकर्ताओं में
तेजस्वी का तेज-प्रभाव
जय भी मैं हूँ निश्चय भी मैं
सात्विकजन का सात्विक भाव.

वृष्णिजनों मैं वासुदेव हूँ
अर्जुन हूँ पाँडव-कुल में
वेदव्यास मैं मुनियों में हूँ
उशना कवि हूँ कवियों में.

दलित कहानीकार प्रेमचन्द

डॉ चन्द्रभान सिंह यादव

हिन्दी कहानी एक शतक की उम्र पूरी कर चुकी है। हिन्दी कहानी के इतिहास में अनेक प्रवृत्तिगत परिवर्तन एवं आन्दोलन आये हैं। दलित और स्त्री-विमर्श समकालीन समीक्षकों के पास दो प्रमुख दृष्टियाँ हैं, जिससे वे हिन्दी साहित्य का पुनर्मुल्यांकन कर रहे हैं। प्रेमचन्द के साहित्य को लेकर अनेक संगोष्ठियों का आयोजन एवं विभिन्न पुस्तकों का लेखन किया जा रहा है। दलित समीक्षकों का यह आरोप है कि प्रेमचन्द ने जो दलितों का चित्रण किया है वह विद्रूप, बीभत्स और कायरतापूर्ण है। प्रेमचन्द के कथासाहित्य का एक पहलू यह भी है कि वह ख़ामोश और मूक पात्रों को आवाज प्रदान करता है। इतिहास एवं परम्परा द्वारा जिन्हें हासिये पर रखा गया वे आपके कथा साहित्य द्वारा चर्चा के केन्द्र में आते हैं। वर्तमान साहित्य में समाज समग्रता के साथ दुर्लभ है। समकालीन साहित्य एवं विज्ञान में माइक्रोस्टडीज का महत्व बढ़ रहा है। यही कारण है कि आज प्रेमचन्द साहित्य को दलित विमर्श, स्त्री-विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सामाजिक विमर्श जैसी अनेक दृष्टियों से देखा जा रहा है।

प्रेमचन्द की अनेक कहानियाँ दलित-चिन्तन को नया आयाम प्रदान करती हैं। जिसमें मन्त्र, सद्गति, दूध का दाम, ठाकुर का कुआँ, सौभाग्य के कोड़े, घासवाली, मंदिर कफ़न प्रमुख हैं। इन कहानियों के माध्यम से न सिर्फ हिन्दू धर्म की पुरोहिती व्यवस्था बल्कि सामंती सोच एवं पूंजीवादी व्यवस्था पर भी एक साथ प्रहार किया गया है। 'ठाकुर का कुआँ' में गंगी का पति कहता है - 'बामन देवता आशीर्वाद देके, ठाकुर साहाब, लाठी मारेगें, शाहूजी एक का पाँच लेंगे। हम लोगों का दर्द कौन समझता है।' जिनका दर्द कोई नहीं समझता उनका दर्द प्रेमचन्द समझते थे। अशिक्षा और गरीबी तथा उससे उपजी समस्याएँ दलित जीवन का अविभाज्य अंग हैं। जिसे उपर्युक्त कहानियों में देखा जा सकता है। रात-दिन की हाड़तोड़ मेहनत के बाद भी इन्हें दो जून की रोटी नहीं नसीब होती। इन कहानियों में वर्ण-व्यवस्था श्रम विभाजन की व्यवस्था के स्थान पर श्रम के मूल्य का शोषण करने वाली व्यवस्था के रूप में सामने आती है। 'कफन के घीसु-माधव इसीलिए श्रम से विरत हो जाते हैं। सनातन धर्म की विसंगतियों और भारतीय समाज व्यवस्था में दलितों की स्थिति से प्रेमचन्द अच्छी तरह वाकिफ़ थे। 'मंदिर' कहानी की सुखिया को इस लोक में न्याय नहीं मिलता तो वह परलोक में भगवान से न्याय की उम्मीद रखती है। मरने के बाद भी सुखिया में न्याय की उम्मीद कायम है। 'दुध का दाम' के मंगल का काम कभी मंगल नहीं होता।

प्रेमचन्द की कहानियों के पात्र दीनहीन हैं तो साथ में आक्रामक भी। 'मन्त्र दो' के भगत का जीवन गरीबी और दरिद्रता में कटता है मगर उसकी वाणी आक्रामक और विचार ओजस्वी है। 'घासवाली' की मुलिया ठाकुर चैन सिंह को बेचैन कर देती है-अपने रूप सौन्दर्य और स्वाभिमान से। चैन सिंह को चेतावनी देते हुए कहती है कि मेरे पति के शरीर में भी लहु है न कि पानी। 'गुल्ली डंडा' कहानी के केन्द्र में चमार जाति से सम्बन्ध रखने वाला 'गया' है। जुरमाना कहानी में भी मेहतर पात्र हैं। यह जाति दलितों में दलित मानी जाती है। प्रेमचन्द के सभी दलित पात्र दब्बू नहीं है वरन् उनमें स्वाभिमान भी है। प्रेमचन्द की दलित स्त्रियों का चरित्र उज्जवल है। आपकी कहानियों का दलित समाज न तो काल्पनिक और न ही आदर्शवादी बल्कि यथार्थवादी है। प्रेमचन्द को जो लोग दलित विरोधी सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं वे न तो दलित साहित्य के प्रति न्याय कर रहे हैं और नहीं प्रेमचन्द के साथ।

डॉ चन्द्रभान सिंह यादव, प्रवक्ता-हिन्दी विभाग,
के.जी.के. (पी.जी) कालेज, मुरादाबाद

....श्री अक्षरगीता

मौन गोप्यभावों में हूँ मैं
दुष्ट-दमन में दण्ड प्रमाण
नीति विजय-इच्छुक में हूँ मैं
विद्वानों में हूँ मैं ज्ञान.
बीज प्राणियों में है जो भी
वही बीज हूँ मैं सब में
मेरे बिना पार्थ कोई भी
प्राणी नहीं चराचर में.
मेरे दिव्यविभूति रूप का
अन्त न कोई पार्थ सही
अतः तुम्हें संक्षिप्त रूप में
निजविभूति की बात कही.
वैभव, शक्ति, काँतियुत जो भी
वस्तु यहाँ पर तुम जानो
है संभूत तेज से मेरे
वह सब ही ऐसा मानो.
अथवा अर्जुन क्या करना है
अधिक जानकर भी तुमको
स्थित हूँ मैं अंशमात्र से
करके व्याप्त जगत सबको.

भारत का राजदूत,
इला अपार्टमेंट,
बी-७, वसुंधरा एन्क्लेव,
दिल्ली-११००९६

भारतीय सांस्कृतिक एकता के प्रतीक ऋषि अगस्त्य

डॉ.एम.शेषन

ऋषि अकस्त्य को तमिल साहित्यकार तमिल भाषा के आदिकवि के रूप में मानते हैं। तमिल साहित्य की परंपरा में यह मान्यता है कि ऋषि अगस्त्य ने ही तमिल भाषा का सर्वप्रथम व्याकरण-शास्त्र रचायत तमिल काव्य के तीन संगमकाल में प्रभभ संगम युगीन कवि के रूप में वे समादृत हैं। संप्रति उपलब्ध तमिल के प्रभभ लक्षण ग्रंथ 'तोलकाप्पियम्' के रचयिता तोलकप्पियर के आप गुरु माने जाते हैं। तोलकाप्पियम की रचना का समय लगभग 2500 पूर्व माना जाता है। ई.पूर्व. चौरीशताब्दी।

तमिल साहित्य-परंपरा के अनुसार बौद्ध धर्म के संस्थापक 'अवलोहित' के नाम से प्रसिद्ध बोधिस्व से आपने तमिल भाषा के व्याकरण शास्त्र का सानप्राण किया था तथा भगवान शंकर और उनका पुत्र कार्तिकेय (मुरुगन्) इन दोनों से भी आपने तमिलभाषा एवं साहित्य का स्थथान अर्जित किया था। इसका विस्तृत विवरण तमिल में रचित 'कन्दपुराणम्' नामक ग्रंथ में इसे उपलब्ध हैं।

रामायण काव्य में इस बात का उल्लेख प्राप्त है कि भगवान श्रीराम ने ऋषि अगस्त्य का वन्दन और अभिनन्दन किया धा। ततमिल काव्य शास्त्र के सुविख्यान मर्मज्ञ एवं समीक्षक 'नाच्चिनार्-क्-किनियर' ने अपनी समीक्षा में इस बास का उल्लेख किया हैं कि अगस्त्य मुनि ने महाभारत के भगवान कृष्ण से भेंट की भी और शारिकापुरी से 'पदिणेन्कुडि वेकिर' नामक लोगों को तमिलनाडु ने आकर बसाया था।

श्रमणक्रंथों में अगस्त्य का उल्लेख प्राप्त होता है। यह किंवदन्दी है कि दक्षिण पूर्वी एशिया के सुमत्रा, जावा आदि द्वीपों में जाकर तमिल शैव धर्म और संप्रदाय को स्थापित करनेवाले शैवगुरु एवं आचार्य के रूप में माने जाते हैं।

तमिल साहित्य के पुराकालीन प्रवन्धकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' तथा 'मणिमेख्लै' तथा प्राचीन संगम काव्य के 'परिपाड़ल' में भी अगस्त्यमुनि का उल्लेख प्राप्त होता है। सुंदर तमिलनाडु के पाण्ड्यप्रदेश के चिन्नमन्नर में प्राप्त वेक्विक्कुडि ताम्रपट्टय' (copper plates) में यह उल्लेख प्राप्त है कि पाण्ड्य नरेश के आप राजगुरु और पुरोहित भी रहे। यह भी बनाया जाता है कि तमिल के प्रसिद्ध शैवपुराण 'पेरियपुराणम्' की भांति अगस्त्य ने संस्कृत भाषा में 'भक्त विलासम्' नामक ग्रंथ की रचना की थी। तमिल साहित्य की परंपरा के अनुसार 'अगत्तियम्' नामक तमिल के प्रभभ व्याकरण-शास्त्र ग्रथ के साथ ही 'सिरुकचियम' तथा 'पेरुचुरियम्' नामक दो ग्रंथ भी रहे हैं।

तमिल में यह परंपरा प्रचलित है कि भगवान शंकर जी तथा माता पार्वती का पाणिग्रहण विवाहोत्सव कैलाशपर्वत पर रचा गया था। उस विवाह महोत्सव में भाग लेने वालों की अतिशय भीड़ के कारण हिमालय पर्वत नीचा होने लगा और दक्षिण भारत का भूभाग ऊँचा उठने लगा था। अतः उत्तर और दक्षिण दोनों भूभागों में समतुल्यता स्थापित करनके के उद्देश्य़ भगवान शंकर ने ऋषि अगस्त्य को दक्षिण प्रदेश भेजा था। इस प्रकार की पोंशिक कथा तमिल प्रदेश में प्राचीनकाल से भी प्रचालित रही है। दक्षिण दिशा की ओर यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय अगस्त्य मुनि अपने साध गंगाजल ले आये थे और वही कावेरी नदी के रूप में प्रवाहित होने लगा।

वैष्णवों में यह मान्यता प्रचलित है कि द्वादश आकवारों के पाशुरम् (दिव्यस्तोत्रगीत) गीतों के संपादन करनेवाले नारदमुनि ने भी अगस्त्य से आशा पाकर उनकी अनुमति प्राप्त कर 'नालायिर दिव्य प्रबन्धम्' (चार सहस्य पदावलि) का संपादन किया था।

आज भी तमिल लोगो में यह विश्वास प्रचलित है कि सदुर तिरुनेलवेली जिला के 'पोदियमलै' (पोदियपर्वत) में अगस्त्य वास करते हैं। ग्रीष्मकाल में लोग अगस्तत्य के दर्शनार्थ 'पोदियमलै' की यात्रा करते हैं। यह पर्वत तिरुनेलवेली-जिला के पापविनाशम् नामक झरने के ऊपर स्थित पुण्यतीर्थ माना जाता है। उसके भी ऊपर 'कल्याण तीर्थ' ओर 'वाणतीर्थ' आदि हैं। लोग तीन चार दिन की भाग के उपशन्त पर्वतारोहण करते हुए अगस्त्य के दर्शन कर आनन्द लाभ प्राप्त करते हैं। तमिलों में यह विश्वास प्रचलित है कि तमिलभूमि न केवल तमिलभाषा केलिए बल्कि 'सिद्ध वैद्यशास्त्र' केलिए भी यह जन्मभूमि है। वैद्यशास्त्र के अनेक ग्रंथ तमिल भाषा में उपलब्ध हैं। सिद्ध वैद्यशास्त्र में महर्षि अगस्त्य केलिए महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यही नहीं अठारह सिद्धपुरुषों की परंपरा में भी महर्षि अगस्त्य का नामोल्लेख प्राप्त है।

इस प्रकार साहित्य व्याकरण शास्त्र भक्ति, वैद्यशास्त्र, धर्म आदि विभिन्न क्षेत्रों में बहुमुखी प्रतिभा संपन्न महर्षि अगस्त्य तमिल-संस्कृत, शैव-वैष्णव, श्रमणधर्म-बौद्ध धर्म, रामायण-महाभारत उत्तर-दक्षिण, हिमालय-कन्याकुमारी, गंगा-कावेरी, उत्तरभारतवासी-दक्षिणभारतवासीयों के बीच सदभावना और सौहार्दभाव स्थापित करनेवाले महर्षि के रूप में भारतीय संस्कृति में समाहृत पुरुष हैं।

विशेषरूप से, प्राचीन तमतिल भाषा, द्राविड जाति, धर्म इन सबसे ऊपर उठकर भारतीय संस्कृति के इतिहास में एक शलाका-पुरुष, भव्य प्रतिभा (ICON) के रूप में वे समादृत हैं। भारतीय भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता के प्रतीक के रूप में महर्षि अगस्त्य आज भी गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुके हैं यह हमारे लिए विस्मय एवं गौरव की बात है।

गुरुकृपा ७९०, डा.ए.रामस्वामी मुतलियार रोड, चेन्नै-१८

सामाजिक स्तरीकरण और संबोधन शब्द

सिंधु एस.एल.

हिन्दी का सामाजिक रूप भाषा के प्रयोग पक्ष पर अवलंबित है। उसका रूप बहुआयामी है। "यदि भाषा एक सामाजिक यथार्थ है और सामाजिक नियंत्रण का एक सशक्त साधन है तो उसका अध्ययन सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में ही किया जाना चाहिए जिससे भाषा के विभिन्न सामाजिक-परिस्थितियों में व्यवहृत रूपों का विश्लेषण किया जा सके और भाषाई और भाषातर तत्वों के प्रयोग का समाज स्वीकृत औचित्य वैज्ञानिक आधार पर स्पष्ट किए जा सकें।" (अशोक कालरा: हिन्दी का सामाजित संदर्भ: पृ:140)

सामाजिक संदर्भों में सामाजिक व्यवस्थायें ही महत्वपूर्ण हैं। वर्णव्यवस्था, धार्मिक आचार, शिक्षा, सत्ता, पेशगी, धन आदि समाजिक स्तर निर्धारित करनेवाले केन्द्र हैं। इनके अनुसार भाषाई-व्यवहार में भी अंतर होते हैं।

वर्णसूचक संबोधन शब्दों का प्रयोग बहुत होता रहा।

"पांडे, तुम यहाँ नौकर हो, मगर ब्राह्मण भी हो। मैं खत्री हूँ।" (अमृतलाल नागर: करवट: पृ:22).

बदलते सामाजिक आयामों में वर्णसूचक संबोधन शब्दों का प्रयोग बहुत कम हो गया है। काम के अनुसार संबोधन बहुत प्रयुक्त हैं। सामाजिक दृष्टि के उच्च काम करनेवाले अपनेलिए पेशे सूचक संबोधन पसन्द करते हैं।

राजनैतिक क्षेत्र में कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग होता है। कामरेड शब्द सुनने पर वामपंथी दल का परिचय मिलता है।

अंग्रेज़ी भाषा के प्रभाव से हर एक भाषाई संस्कृति के संबोधन लुप्त होने लगे। अरे, मैडम, अंकल आदि शब्द सर्वसाधारण संबोधन बन गये।

सामाजिक दृष्टि से शैली को देखने से पता चलता है कि सामाजिक सार, सामाजिक-परिस्थिति, सामाजिक भूमिका के अंतर्गत किस प्रकार बदलती रहती है।

सामाजिक शैली किसी विशिष्ट स्थिति में वार्ता का एक ऐसा प्रकार है जो किसी विशेष शैक्षिक, जातीय, धार्मिक, आर्थिक आदि स्तर पर सामाजिक बंधनों के नियंत्रित रूप से स्वचालित होती है।

समाज के बदलते आयामों में व्यक्ति अपने परिवेश के अनुसार भाषा का प्रयोग करता है। सामाजिक गतिशीलता के आधार पर सामाजिक सोपान - क्रम में उतार - चढ़ाव आते रहते हैं। भाषाई विविधता सामाजिक वर्गीकरण से स्पष्ट होती है। हिन्दी भाषा - भाषी क्षेत्र के शहरी और ग्राम्य, शिक्षित एवं आशिक्षित, उच्च एवं निम्न वर्ग के बीच पायी पानेवाली विविधता का चित्र संबोधन में भी मिलता है। नगरीकरण, विदेशीशिक्षा, भूमंडलीकरण आदि से संबोधन शब्दों में बदलाव आया है। सामाजिक संस्थाओं और उसके निर्धारक तत्वों में होनेवाले परिवर्तन संबोधन शब्दों को भी बदलते हैं।

सिन्धु एस.एल., प्राध्यापिका, सरकारी कालेज,
तृप्पूणित्तुरा, कोच्चि, केरल

Global Festival - Celebrating God's Descent for Golden Era, Thiruvananthapuram
September 19th 2010 4 p.m. at Chandrasekharan Nair Stadium

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने

सबिना पी.एस. (90)

एम.ए. (हिन्दी), बी.एड़, SET। श्री. श्रीजित की पत्नी। अब केरल विश्वविद्यालय के अधीन शोधकार्य (पि.एच.डी) कर रही है। शोध विषय राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में बदले मानव संबंध। एस.एन.कॉलज के हिन्दी विभाग की अध्यापिका डॉ. एस. लीलाकुमारी अम्मा हैं शोध निर्देशिका।

पता: विशाख, जवहर जङ्शन, पारिप्पल्ली पी.ओ., कोल्लम

श्रीमती सिन्धु एस.ऐल. (91)

सरकारी कालेज, तृप्पूणित्तुरा में प्राध्यापिका। एम.ए. बि.एड़, एम.फिल; NET; SET; कोल्लम रोहिणी में श्री अनिलकुमार की पत्नी। अब केरल विश्वविद्यालय के डा.एन.सुरेशजी के निदेशन में शोध कार्य कर रही है।

पता: रोहिणी, १२४, टी.डी.नगर, कोल्लम-१३

हिन्दी साहित्य के विकास में 'सरस्वती' का योगदान

आशाराणी

हिन्दी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग को क्रान्तिकारी युग की संज्ञा दी जाती है। साहित्य के सभी अंगों में एक व्यापक परिवर्तन इस युग में दिखाई पड़ता है। इस नई क्रान्ति के प्रेरक व्यक्तित्व आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। सरस्वती के पृष्ठों से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसका उद्घोषण किया। साहित्य की सभी विधाओं की रचनायें सरस्वती में प्रकाशित होती थीं। सरस्वती ने हिन्दी साहित्य के विकास केलिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बीसवीं शताब्दी का प्रथम देशक हिन्दी पत्रकारिता का नवोदय माना जाता है। भाषा और साहित्य के विकास केलिए इस समय दो संस्थायें स्थापित हुई। एक 'नागरी प्रचारिणी सभा काशी' और दूसरा 'सरस्वती पत्रिका'। सरस्वती के प्रकाशन ने हिन्दी भाषा और साहित्य को व्यवस्थित और प्रतिष्ठित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया। सन् 1900 में सरस्वती का प्रकाशन शुरु हुआ। इस मासिक पत्रिका के प्रकाशन का कार्य सबसे पहले चिन्तामणी घोष ने किया। घोषजी के बाद उनके अनुरोध पर सरस्वती के संपादन का कार्य-भर सभा ने ले लिया। एक वर्ष एक श्याम सुन्दर दास, राधाकृष्णदास, जगन्नाथ दास, कार्तिक प्रसाद और किशोरीलाल गोस्वामी इसके संपादक मंडल में रहे थे।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती के संपादन का कार्य सन् 1903 से संभाला। इसका प्रकाशन प्रारंभ में काशी से चलता था। बाद में प्रयाग से। सरस्वती के माध्यम से द्विवेदी जी ने गद्य पद्य के भेद को मिटा दिया उन्होंने इसमें ब्रज और खडीबोली दोनों की रचनायें छापी थीं। फिर भी अधिक प्रमुखता खडीबोली की रचनाओं को दी। इस समय गद्य और पद्य की भाषा खड़ीबोली हो गयी। साहित्य के सभी अंशों, यथा कविता, कहानी, आलोचन, निबन्ध रेखाचित्र, नाटक और उपन्यास के सरस्वती पत्रिका में स्थान देकर सचमुच क्रान्दि ही ला दी।

सरस्वती की महान उपलब्धियों को तीन रुपों में बाँट सकते हैं।

१. सरस्वती ने खडीबोली में कविता लिकनेवालों क जन्म दिया।
२. हिन्दी लेखन की वर्तनी को शुद्ध और स्थिर बनाया तथा भाषा क व्याकरण की दृष्टि से पुष्ट एवं शास्त्र-सम्मत बनाया। इसे सरस्वतीकी द्वितीय देन के रुप में समझ जाता है।
३. संपादकीय टिप्पणियों तथा समालोचना को इसकी तीसरी देन मानी जाती है। जन-जीवन से संबन्धित सभी विषयों पर सरस्वती टिप्पणियाँ प्रस्तुत करती थी और इसमें आनेवाली समालोचनाओं को सही मानी जाती थी।

इस प्रकार सरस्वती की लोकप्रियता बंद गयी और हिन्दी की जातीय पत्रिका के रुप में इसकी सम्मान बंद गया।

द्विवेदी युगीन प्रतिनिधि पत्रिका सरस्वती के पृष्ठों से साहित्य की सभी विधाएं विकसित हुईं। कविता के क्षेत्र में द्विवेदी युग के प्रथम देशक भारतेन्दुयुगीन काव्य प्रवृत्तियों का ही प्रसार हुआ। इस युग में कविता के मुख्यतः तीन प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती है - मानवता, प्रकृति और राष्ट्रप्रेम। द्विवेदी युगीन पत्रिकाओं ने इन प्रवृत्तियों के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस प्रकार हम देखते हे कि साहित्य की समग्र विधाओं के विकास में द्विवेदी युगीन प्रतिनिधि प्रत्रिका सरस्वती ने महत्वपूर्ण योग दिया है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य था कि हिन्दी रसिकों के मनोरंजन के साथ साथ भाषा के सरस्वती-भण्डार की पुष्टि, वृद्धि और यथावत पूर्ति हो। इसमें गद्य, पद्य, नाटक, उपन्यास आदि विभिन्न विषयों का समावेश हो। और लेखकों सी यथोचित समालोचना की जाय।

हिन्दी साहित्य में 'सरस्वती' के प्रयास से नये युग का समारंभ हुआ। इस पत्रिका ने ही आधुनिक हिन्दी साहित्य के स्वर्णयुग का द्वार खोला और हिन्दी साहित्य को विश्व साहित्य के मंच पर प्रतिष्ठित किया।

साकेतम, आलंतरा, तिरुवनन्तपुरम

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने

श्री मुहम्मद सलीम खान (93)

हिन्दी अध्यापक सरकारी एस.के.वी.यू.पी. स्कूल, करुनागप्पल्ली, कोल्लम। हिंदी प्रचारक। रचना-खेलें-गाएँ-सीखें (बाल-कविता) पुरस्कार-राष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन २००९ बालसाहित्य पुरस्कार, केरल स्टेट हिंदी प्रचारक समिति का युवा हिंदी प्रचारक पुरस्कार, २०१० सम्पादक - "मशाल"।

श्री जी. रवीन्द्रन पिल्लै (92)

एम.ए; बी.एड़। ३४ वर्ष तक केन्द्रीय विद्यालयों में अध्यापन। पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। पत्नी वी.राधम्मा केन्द्रीय विद्यालय में उपप्राचार्य रही थीं। 'भाव खुले, फूल-खिले' काव्य संग्रह।

संपर्क - भारती 11/768 कोट्टुंगानूर, त्रिवेन्द्रम

एक इंच मुस्कानः एक नया प्रयोग

सबिना पी.एस.

राजेन्द्र यादव हिन्दी कथा साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर है। स्वातंत्रयोत्तर युगीन कहानीकारों में उनका नाम उल्लेखनीय है। उनका जनम 28 अगस्त 1929 को राजा मंडी आगरा में हुआ था। यादवजी मुख्यतः सामाजिक संचेतना के कहानीकार हैं। नई कहानी के प्रमुख सूत्रधारों में भी उनका नाम आता है। साहित्य सृजन को स्वधर्म के रूप में उन्होंने अपनाया। अतः उन्होंने अपनी सर्जकता में अर्थ, राजनीति आदि को दृष्टि में रखकर समझौते नहीं किये। वे एकमात्र साहित्य के प्रति प्रतिबद्ध बने रहे। उन्होंने अपने लेखन में विशिष्ट फार्मूलों को नहीं अपनाया। अतः उनके नाम पर लेखन को स्वधर्म या पेशे के रूप में अपनाने के बावजूद केवल नब्बे के आसपास कहानियाँ और सात उपन्यास ही हैं। अपने लेखन को स्तरीय एवं प्रामाणिक बनाने केलिए उन्होंने सदैव प्रयत्न किया।

'एक इंच मुस्कान' राजेन्द्र यादव और उनकी पत्नी मन्नू भण्डारी के सम्मिलित लेखन की उपज हैं। सहलेखन की यह प्रक्रिया हिन्दी साहित्य संसार में एक सर्वथा नई रचना-रीति और एक प्रयोग है। इस उपन्यास में नायक का स्थान एक लेखक पात्र को दिया गया है। नायक अमर और उनसे सम्बन्ध रखने वाली दो नारियों-अमला और रंजना-का चित्रण इस उपन्यास में मिलता है। उपन्यास के नायक अमरवाले भाग की रचना यादवजी ने की और स्त्री पात्र अमला-रंजना वाले अध्यायों की रचना मन्नू भण्डारी ने की। यह भी रचना-रीति में एक नितान्त नवीन प्रयोग है। कलाकार पात्र के द्वारा इस उपन्यास में यादवजी ने कला संबन्धी अपने 'मुखर चिन्तन' क प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास खण्डित व्यक्तित्ववाले आधुनिक व्यक्ति की ट्रेजडी है। अमर की बेचैनी का मुख्य कारण यह माना जा सकता है कि वह अमला और रंजना की संगति बिठा नहीं पाता। एक ओर रंजना जिम्मेदारी, सुविधा और संस्कार बद्धता याने कुल मिलाकर मानवीय नैतिकताबोध है तो दूसरी ओर अमला वर्जनाओं-बंधनों से मुक्ति की कामना है। व्यक्ति के रूप में जहाँ अमर केलिए रंजना अनिवार्य है वहाँ वह अमला की उपेक्षा भी नहीं कर पाता। रंजना के प्रति उसकी निष्ठा और आत्मीयता में कहीं भी कमी नहीं रहती, लेकिन उससे अलगाव हमेशा स्पष्ट दिखाई पड़ता है। जिस द्वन्द्व से बचने केलिए अमर ने रंजना से शादी की वह शादी के बाद और भीषण बन जाता है। हर क्षण अमर की मुक्ति-कामना चोट खाती है। "जिस मुक्ति-कामना के अभाव में अमर का 'लेखक' मर जाता है, उसे रंजना का सामीप्य सीमित करना चाहता है। यह दुविधा तीनों व्यक्तियों के संतुष्ट जीवन को बर्बाद कर देती है। दो मूल्यों के बीच में पड़ने से प्रताड़ित होने वाले कलाकर-व्यक्तित्व का सजीव चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।"

'एक इंच मुस्कान' वस्तुगत और शिल्पगत प्रयोगों को साथ लेते हुए चौदह अध्यायों में समाप्त होता हैं। इसके समसंख्यक अध्याय मन्नू भण्डारी के और विषमसंख्यक अध्याय राजेन्द्र यादव के लिखे हुए हैं। उपन्यास की दुनिया में यह एक नया प्रयोग है। कथ्य स्मृतियों के रूप में शुरू होता है। पहले अध्याय में ही यादवजी ने बडी कुशलता के साथ उपन्यास की संपूर्ण कथावस्तु की सूचना दी है। इसका प्रथम अध्याय अन्त से प्रारंभ होता है। कथानक के तीन पात्र मुख्य रहते हैं-अमर, रंजना और अमला। अमर के माध्यम से यादवजी लेखकीय व्यक्तित्व की समस्याओं को समझाने का प्रयास करते हैं। व्यक्ति और लेखक का संघर्ष उपन्यास की कथावस्तु के मूल में है।

उपन्यास के कथानक में एकनिष्ठता का अभाव बताते हुए डॉ. त्रिभुवन सिंह की टिप्पणी है - "लेखक द्वय को भी 'एक इंच मुस्कान' के एकनिष्ठ प्रभाव के प्रति सन्देह बना हुआ है और इसलिए उपन्यास के अंत में लम्बे-चौड़े वक्तव्य देना पड़ा। मन्नू भण्डारी को उपन्यास के अंत में बडी सफाई देनी पडी है। इस सिलसिले में कुछ व्यक्तिगत बातों का भी उन्होंने उल्लेख किया है जिसका इस उपन्यास से कोई मतलब नहीं है।" कथावस्तु में एकनिष्ठता का अभाव होते हुए भी इस उपन्यास की रचनारीति को हिन्दी में एक नवीन प्रयोग मान लेने से यह दोष तुच्छ गिना जाएगा। लेकिन उपन्यास के अंत में दिये गए इतने विस्तृत दो-दो अलग वक्तव्यों से इस उपन्यास के महत्व में कोई वृद्धि नहीं आ पाई है। अपने उपन्यास की लोकप्रियता के संबंध में लेखक की ओर से ही बयान देना या समर्थन करना कुछ खटकता है। लेखक-लेखिका के अपने-अपने वक्तव्यों से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि एक प्रबुद्ध व्यक्ति के आत्मान्वेषण के इरादे से लिखे गये इस उपन्यास को यादवाजी ने 'त्रिकोणवादी' उपन्यासों से अलग रखने की कोशिश की है। ठीक है, परम्परागत त्रिकोणवादी उपन्यासों में अंत में एक नायिका या एक नायक को हटाकर दूसरे का मार्ग सुगम कर दिया जाता है। लेकिन

महाकील तंत्र

डा. वी. गोविन्द शेनाय, त्रिचूर

बिब्बली बाई ने बीं.काम. परीक्षा आखिर पास कर ही ली। यह चौथा श्रम था। दो बार परीक्षा की फीस ही नहीं जमा की और तीसरी बार फीस भी जमा की और परीक्षा भी। परन्तु फेल हो गई। इस बार विजयी होने पर माँ-बाप ने पडोस में लड्डू बाँदी और बिब्बली ने "फैशन रस्त्रो" में इष्टमित्रों को दावत दी। पिता मंकड् नगर निगम का सफाई अफसर था। सफाई का काम स्वयं कभी कभी ही करता था। मेयर साहब के यहाँ आना जाना होता था जिस से रुपया औरों से उधार लेने में सुविधा रहती थी। ऐसे ही बिब्बली केलिए उसने मोटर साइकिल खरीदी थी बगैर किसी तरह की लिखापढी के मात्र दस्तखत के बल पर। पुत्री की मेधा और कार्यकुशलता पर मंकडू को गर्व था और विश्वास था कि वह कोई उन्नत पद पाकर ही दम लेगी। बी.काम. तक पहूँचते पहूँचते बिब्बली चौबीस साल की हो चुकी थी। वह कानून, कम्पूटर साइन्स और एम.बी.ए. की पढाई करना चाहती थी और सब एक साथ ही। उधर माँ कुन्ती पुत्री के भविष्य की चिंता में घुलती जा रही थी। भगवान याद आये, साथ ही मांत्रिक ज्योतिषी बंभूलजी भी। मंदिर गई, फिर मांत्रिक ज्योतिषी के यहाँ। ज्यातिषी ने नियत दक्षिणा और पूजा प्रार्थना व्यय वसूलने के पश्चात आश्वासन दिया, बिब्बली को हवाई उडान और विवाह दोनों का योग है, एक साथ ही। विघ्न बाधा के निवारणार्थ "महाकील तंत्र" का प्रयोग अपेक्षित है जो अल्प व्यय में हो सकता है। कुँती घर लौटी तो पति मंकडू इन्तज़ार मे बैठे दिखे। खुश खबरी दी। पुत्री प्रशिक्षणार्थ कम्प्यूटर शिक्षा केंद्र गई थी, लौटी नही थी। जब लौटी तो रात गहरी हो चुकी थी। पूछने पर जवाब मिला, प्रोफेसर साहब के साथ हवाई अट्टे पर दुबाईवाले व्यवसाई से बात करने और परचे भरवाने गई थी। कुन्ती के मुँह से निकल पडा-मांत्रिक् ज्योतिषी से बात भर करने पर इतना होता तो कील तंत्र हो जाने पर क्या नहीं होता! बिब्बली एक दम यह सब समझ नहीं पाई। जब समझ गई तो कह कुछ भी नहीं पाई। भौंच की सी रह गई। •

एक इंच मुस्कानः एक नया प्रयोग

'एक इंच मुस्कान' में रंजना हमेशा के लिए घर छोड़ चली जाती है और अमला विक्षिप्त होकर इस दुनिया से नाता तोडती है तो रह जाता है अमर। प्रणय से जुडे हुए आन्दरिक द्वन्द्ध और आत्मग्लानि का शिकार बनकर अकेलेपन में उलझने को वह अभिशप्त हो जाता है।

उपन्यास के प्रारंभ में पूरी और जुहु के समुद्र के विभिन्न रुपों का उल्लेख विशेष मतलब से किया गया है। पुरी के सागर का रौद्र सौंदर्य हमेशा आह्वान करता-सा दिखाई देता है। वह अमला का प्रतीक है। लेकिन जुहु का सागर सरल, सौम्य और समर्पित सा रहता है। वह रंजना है तो एक नैवेद्य की तरह समर्पित बनकर रहती है। एक में उप्रतिरोध निमंत्रण और दूसरे में संयत समर्पण। ये दो स्थितियाँ दो मूल्य बनकर अमर के जीवन में आ जाती हैं। लेकिन कठिनाई तो इस बात में है कि इन दो मूल्यों के बीच वह संगति बिठा न सका। मूल्यों के संघर्ष से जीवन में जो दुस्थिति पैदा हो जाती है अमर उसका प्रतीक बना दिया जाता है। किसी एक मूल्य की स्वीकृतिखुले दिल से वह करता तो उसका जीवन इतना उलझा हुआ, दूभर और दारुण नहीं बनता। दो मूल्यों के एक साथ रहते समय उनकी सही पहचान न कर सकने का नतीजा भी अमर के द्वारा यादवजी ने व्यक्त किया है। ये दोनों मूल्य दूर हो जाएँगे, नष्ट हो जाएँगे और जीवन में शेष रह जाएगा। तरल अंधकार का समुद्र कहीं भीतर दूर-दूर के क्षितिज बहाता चला आता है। रंजना और अमला से अलग होने के पाँच साल बाद भू अमर की बेचैनी समाप्त नहीं होती, उसकी भटकन समाप्त नहीं होती, उसके मन के दो मूल्यों का द्वन्द्ध समाप्त नहीं होता। मूल्यों का संरक्षण अमर चाहता है, लेकिन उसके लिए प्रयत्नवान नहीं होता। इस उलझन से पीडित अमर मध्यवर्गीय विषमता का प्रतिनिधि बनकर रहा है। मध्यवर्ग मूल्यों की सुरक्षा चाहता है लेकिन स्वीकृति चाहता नहीं। मूल्यों के मिट जाने पर उस पर रोने वाला बन जाता है। मध्यवर्ग की यह नियति अमर का भी पीछा करती है। वह रंजना के प्रति भी विश्वस्त न रह पाया और अमला के प्रति भी।

निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि 'एक इंच मुस्कान' अमर-रंजना-अमला त्रिकोण की कथा रहते हुए भी लेखकीय व्यक्तित्व के खण्डित रुपों के चित्रण करने के साथ-साथ उससे उत्पन्न विसंगतियों का चित्रण भी इसमें आ पडा है।

सबिना पी.एस., विशाख, जवहर जङशन,
पारिपल्ली पि.ओ., कोल्लम

राष्ट्रभाषा स्वाभिमान सम्मेलन सम्पन्न

हिन्दी को एकमात्र राष्ट्रभाषा घोषित कराने का संकल्प मथुरा से राष्ट्रीय अभियान का प्रारंभ हुआ

यू.एस.एम.पत्रिका, गाज़ियाबाद। देश के विभिन्न राज्यों से आए हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार, कवि, पत्रकार एवं हिन्दीसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने एक स्वर से प्रस्ताव पारित कर यह संकल्प लिया कि संपूर्ण देश में बोली और समझी जाने वाली एक मात्र भाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कराने के लिए सक्रिय रूप से राष्ट्रीय अभियान प्रारंभ किया जाए। प्रस्ताव में कहा गया है कि सवा अरब की जनसंख्या वाले विश्व के सबसे विशाल लोकतांत्रिक देश भारत की स्वतंत्रता के ६३ वर्ष पश्चात् भी भारत की कोई राष्ट्रभाषा घोषित नहीं है जबकि सभी दृष्टियों से हिन्दी राष्ट्रभाषा होने का पात्र है। संकल्पकर्ताओं द्वारा यह भी कहा गया है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कराने के लिए देश के सभी राज्यों से राष्ट्रीय अभियान चलाया जाए और इसका प्रारंभ मथुरा से हो।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा का स्थापना दिवस तथा डॉ. अनिता विजय ठक्कर की पुस्तक 'हिन्दी की प्रचार संस्थाएँ' : स्वरूप और इतिहास का लोकार्पण

वर्धा, 5 जुलाई, 2009 - "अपनी धरती की गहराई में जडें रखने वाले पौधे किसी भी दिशा से आनेवाले वायु के उष्ण व शीतल झोंकों से खेलते हुए डटे रहने में कामयाब रहते हैं। पूज्य बापू की कर्मभूमि वर्धा में महात्मा गांधी द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने देश की समन्वयात्मक भाषा हिन्दी की सेवा करने में अपूर्व क्षमता का कीर्तिमान स्थापित किया है। राष्ट्र-राज्य मज़बूत रखने का जरिया भाषा है। करीब 50 महत्वपूर्ण भाषाओं में हिन्दी का स्थान सबसे ऊपर है। गांधीजी के साथ कई महापुरुषों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार को ही बढ़ावा नहीं दिया अपितु देश की आज़ादी, समतामूलक समाज के निर्माण में हिन्दी को औज़ार के रूप में प्रयोग किया। हिन्दी प्रचार-प्रसार करनेवाली संस्थाओं के बारे में दस्तावेजीकरण करने की जरूरत है, शोध-कार्य भी किया जाना चाहिए। लेखिका डॉ. अनिता विजय ठक्कर ने एक बहु आयामी अनुसंधान कर हिन्दी प्रचार संस्थाओं के शोध के द्वार खोल दिए हैं। इस तरह के शोध से कई तथ्य हमारे समक्ष प्रस्तुत हो पायेंगे।"

पत्रिकाएँ हमारी साहित्यिक समृद्धता का प्रतीक हैं ('वयम')

खरगोन म.प्र.। 'हिन्दी में आज भी उत्कृष्ट और रुचिपूर्ण साहित्यिक पत्रिकाओं की अच्छी खासी तादाद है। हालाँकि इनकी संख्या और पाठक संख्या का अंतर चौंकाने वाला है, लेकिन फिर भी ये आश्वस्त करती हैं कि हिंदी में भी इन दिनों खूब रचनात्मक और मौलिक लिखा जा रहा है। शब्द के खिलाफ बाजार के षडयंत्र के प्रचार और यथार्थ के बावजूद पत्रिकाओं की यह बढ़ती संख्या पाठकीय भरोसे के बचे रहने के संकेत हैं। यह बात इस प्रदर्शनी को देखकर भरोसे के साथ सही जा सकती है।' उक्त बात साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था वयम् के तत्वावधान में विगत 3 अप्रैल को संस्था की छटवीं वर्षगाठ पर प्रथम सत्र में आयोजित हिन्दी साहित्यिक पत्रिका प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर ख्यात कहानीकार भालचन्द्र जोशी ने अपने उद्बोधन में कही।

इस प्रदर्शनी में हिंदी की लगभग 300 साहित्यिक पत्रिकाओं-लघुपत्रिकाओं का स्थानीय टाउन हॉल में सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया। इन पत्रिकाओं का संकलन एवं संयोजन युवा कवि प्रदीप जिलवाने ने किया।

संस्था 'वयम्' के अध्यक्ष श्री सुनील गीते ने हिंदी समाज और पत्रिकाओं में पाठकों की घटती संख्या पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि इतनी मात्रा में पत्रिकाएँ देश भर से आ रही हैं फिर भी छोटे शहरों के पाठकों तक नहीं पहूँचा पा रही है, यह एक बडी चिंता का विषय है। आखिर साहित्यिक पत्रिकाओं से पाठक क्यों घट रहे हैं, इसकी पड़ताल होनी चाहिए।

राजभाषा के लिए अविराम संग्राम

पिछले उनीस वर्षों से केरल हिन्दी साहित्य अकादमी और शोध पत्रिका राजभाषा के स्वत्वाधिकार के लिए निर्भीक होकर लड रही है। इसमें आये सम्पादकीय इस सत्य के साक्षी हैं। डा. नायर का सम्पादकीय संज्ञक ग्रंथ (मूल्य २५०.००) इसका प्रमाण है। शोध-पत्रिका का तपस्यारत प्रयास आज दुनिया उसके वेबसाईट देखकर आश्चर्यान्वित है। उसके दर्शकों का पत्र एवं अनुमोदन आगे पत्रिका में प्रकाशित होंगे।

चिरजीव महाकाव्य, भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल पृष्ठ

आचार्य डॉ.विष्णुदत्त राकेश

'चिरजीवन महाकाव्य' हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर का गाथाकाव्य है। पुराणों में उल्लिखित सात चिरजीवियों की जीवनगाथा को लेकर इस महाकाव्य की रचना हुई है। डॉ.नायर समीक्षक एवं नाटककार के रूप में ख्यातिप्राप्त हैं। इस रचना से उनके उत्कृष्ट कवि रचनाकार का रूप सामने आया है, महदुद्देश्य से दिखा गया यह गाथाकाव्य महाकाव्य है, महाकाव्य के परंपरित ढाँचे से हटकर कवि ने इस चरित्र प्रधान काव्य की रचना की है। वैदिक युगीन गाथा ताराशंसा काव्य व्यक्ति विशेष के उस गुण विशेष का उद्घाटन करता था जो उस चरित्र को अन्यों से सर्वथा भिन्न रूप में प्रकट करता है। भारतीय संस्कृति के उदात्त गुणों के प्रकटीकरण में मानवजीवन की स्वाभाविक दुर्बलता भी वैसे ही तरल हो जाती है, जैसे चन्द्रमा की ज्योत्स्ना की विभाराशि में उसकी कजलाई श्यामलता आँखों को अकुलाहट नहीं देती। इस काव्य में अश्वत्थामा, विभीषण, कृपाचार्य ऐसे ही पात्र हैं।

इस महाकाव्य की सर्जना सोद्देश्य हुई है। कवि का कथन है, क्योंकि कथा में आए पात्र अद्भुत किन्तु महत् जीवन के धनी हैं, मानव जीवन के शाश्वत तत्व उनके जीवन तथा क्रियाकलाप में घुलमिल गए हैं, सम्पूर्ण विकसित जीवन की भारतीय परंपरा उनमें जीवंत रूप में देखने को मिलती है, अत: भारतीय इतिहास जब भी आगे बढ़ने के लिए पीछे की ओर झाँकेगा, उसे यह सात चिरजीवी भास्वरनक्षत्रों के रूप में जगमगाते दिखाई पडेंगे। ये इतिहास के प्रेरक पुरुष हैं, जिनकी मानवीय दुर्बलता के कलेवर में देवत्व चमक उठता है। कवि की स्वीकारोक्ति है-

जीवन हैं उनके महाद्भुत
इस कारण से नाम है चिरजीव
जिस स्वभाव से रहे प्रत्येक,
उस बल से चमके चिरजीव।
मानवजीवन का शाश्वत
भावरूप में अति आकर्षक।
द्युतिमान रहे थे ये सातों
निजपरंपरा में अक्षुण्ण। (पृ.७)

इतिवृत का चयन करने के लिए कवि ने रामायण, अध्यात्म रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत, महापुराण, विष्णुपुराण, देवीभागवत तथा पुराण को आधार रूप में ग्रहण किया है। अपने आप में सातों खण्ड स्वतंत्र हैं पर संचित होकर गाथाकाव्य के रूप में एकार्थ की पूर्ति के कारण एकार्थकाव्य बन जाते हैं। शास्त्रीय शब्दावली में रूपरचना की दृष्टि से इसे एकार्थकाव्य ही कहा जा सकता है।

जहाँ तक कवि के लक्ष्य का प्रश्न है, वह भारत की अखण्डता का पक्षधर है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अन्दर और बाहर से एक हो, द्वन्द्वों से मुक्त स्थिर लक्ष्यवाला हो, व्यास की तरह ज्ञान संपन्न, बलि की तरह दानी, हनुमान की तरह सेवाव्रति, परशुराम की तरह आतंक-शोषण का दमनकर्ता, कृपाचार्य की तरह किंकर्तव्य विमूढता का त्याग, व्यास की तरह कालजयी सर्जना, विभीषण की तरह उदार मानवतावादी तथा अश्वत्थामा की तरह प्रगाढ़ विश्वास से परिपूर्ण हो।

कवि इन सात पात्रों की इन सात चरित्रांक विशेषताओं को आधुनिक भारत के प्रत्येक व्यक्ति में रखना चाहता है, इसीलिए कवि का कथन है-

मैं स्वयं बना हूँ मानव चिरजीव,
उक्त चिरंजीवी का वंशज मानव
मुझ में समा हुआ है अश्वत्थामा,
मुझ में जीवित रहते हैं सातों चिरंजीव (पृष्ठ २९)

कृपाचार्य बने चिरजीवों में एक
वर कविजनों में इस युग का मैं एक
आचार्य कृप है तो चन्द्र भी आचार्य
पर अन्तर दोनों का कितने युगों का रहा। (पृष्ठ २८६)

यहाँ चन्द्र शब्द चन्द्रशेखरन नायर के लिए है जो रूप के साथ तादात्म्य स्थापित कर बदलते जीवन मूल्यों के बीच अनिश्चय की स्थिति में संग्रामरत हैं, सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण को रोकना चाहते हैं पर विवश हैं, कवि की स्वीकारोक्ति लीजिए-

मानव हैं हम कलियुग के वर
देखते हैं स्वयं अपने में कृप को।
साक्षी हैं हम तटस्थ अधर्म सम्मुख
आश्वास पाते हैं, 'क्या करें विवश'। (पृष्ठ २८६)

कवि ने श्रीरामपरिवार की दण्डकारण्य चर्या का उल्लेख भी विशेष प्रयोजन से किया है। वह अवतारी पात्रों को आदर्श मानवीय धरातल पर रख कर देखना चाहते हैं। परशुराम विष्णुधनुष की प्रत्यंचा शिंचवाकर शौर्य तथा अमोघ वीर्य की कसौटी पर राम के ईश्वरत्व की परख करते हैं पर चन्द्रशेखरन के परशुराम सृजनधर्म के आधार पर कवि और प्रजापति की एकरूपता को इसके लिए कसौटी बनाते हैं, पेड़ पौधों को सींचनेवाली भगवती सीता को मैथिली शरण गुप्त ने साकेत में नया रूप दिया है पर इस काव्य के रचनाकार ने स्वयं को परशुराम के नये रचनात्मक अनुभव से जोड़कर परम्परागत पात्रों को नवीन छवि प्रदान की है। कवि लिखते हैं-

परशुराम रहे थे घूम वनान्तरों में,
सुना, आए हैं राम दण्डकारण्य वन में,
पत्नी सीता एवं अनुज लक्ष्मण समेत,
मन में आया आमोद अमंद गये उसी ओर।
जाकर क्या देख रहे हैं मुनिवर अवाक हो

सायंकाल में तीनों रामपरिवार के पात्र
अपने ही हाथों लगाए वृक्षों को घडा भर
पानी दे रहे हैं वन में सहज आमोद से।
भगवान धर्म पुरुष अणु-अणु में निवसित
परम पूजनीय आप इस वन में क्यों
आपने मनुष्य रूप में मुझे दूसरी बार
हरा दिया है यहाँ सृजनधर्म लेकर (पृष्ठ २०७)

सूजनधर्म यहाँ सार्थक प्रयोग है। एक ओर गीता की उक्ति 'तदात्मानं सृजाम्यहम्' की ओर संकेत कर अवतार का प्रयोजन बाताना कवि को अभीष्ट है, दूसरी ओर ईशावास्योपनिषद् की आज्ञा कुर्वन्नेवेह कर्माणि पर बल देना है। अवतारी पुरुष इसलिए अनुकरणीय है कि वह कर्मनिष्ठ होकर व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाता है। वह अतिमानवीय चरित्र का धनि होकर भी मानवसुलभ कार्यव्यापारों से लोकजीवन में पैठ बनाता है, परशुराम का जीवन अतिमानवीय है। माता और भाइयों का वध तथा क्षत्रियों का संहार उनका अतिमानवीय कार्यव्यापार है। पर केरल की वनसभ्यता का संरक्षण कर परशुराम जी मानवीय धरातल पर उतर आए और एक नये सुजनात्मक विग्रह के साथ केरलवासियों के मनमंदिर में प्रतिष्ठित हुए। दानवीर बलि का प्रसंग उठाकर कवि ने सत्यप्रतिज्ञा की मर्यादा को उजागर किया है, यह भारतीय महापुरुषों की गौरवमयी परंपरा का एक अंग है। तुलसी के 'प्राणजाएँ वरु वचन न जाई' के समान ही वचन खोना प्राण खोने के बराबर कहकर कवि ने महनीय जीवनादर्श की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट कराया है। कवि के इस कथन का अभिप्राय समझने की चेष्टा करें पाठक-

सत्यता का निर्वहण किया बलिने,
सगर्व गए वे पाताल सिर पर श्रीचरणधर
तब भी वह सिर कभी झुका नहीं था,
यदि झुका होता तो वामन कहीं गिर पड़ता (पृष्ठ ४०)

इस काव्य की एक विसेषता यह भी है कि इसकी कथा में परंपरागत तथ्यों के नियोजन के साथ आधुनिक विचार बिन्दुओं को कुशलता के साथ पिरो दिया गया है। केरलीय जीवन के पर्वों - त्यौहारों के साथ भी कथा-घटनाओं को जोड़ा गया है तथा प्रासंगिक कथाओं और लगभग १७६ पौराणिक पात्रोकं के संकेत संदर्भ देकर पाठकों को विशाल पौराणिक बाङ्मय के स्वाध्याय की प्रेरणा दी है। इन पात्रों में कुछ चिरपरिचित, कुछ अल्पपरिचित और कुछ सामान्य पाठक के लिए सर्वथा अपिरिचित हो सकते हैं। कवि हिन्दी के साथ संस्कृत का भी विद्वान है, इसलिए संस्कृत निष्ठ शब्दों के प्रयोग में उसने स्वयं को सहज रखा है। स्वर्गस्थ प्राणी के लिए नाकजन शब्द का प्रयोग ऐसा ही है।

मैंने इस काव्य का आद्योपान्त अध्ययन किया है और क्योंकि भारतीय वाङ्मय के प्रौढ़ ग्रंथों, श्रुतियों - पुराणों तथा उपनिषदों का पठन-पाठन अनवरत पचास वर्षों से भी अधिक समय से कर करा रहा हूँ, अतः चिरजीव महाकाव्य के कथा सौन्दर्य से गहरे से प्रभावित हुआ हूँ। मेरी दृष्टि में इस काव्य की महत्ता कथा-संरचना परक सौन्दर्य के कारण है, कलात्मक पक्ष उतना प्रौढ़ नहीं जितना चरित्र विश्लेषात्मक पक्ष। अतः गाथा ताराशंसी रूप में ही इस काव्य का मूल्यांकन करना प्रशस्त रहेगा। अपने घर की चौखट पर खडे होकर कवि ने पहले अपने प्रदेश की झाँकी ली और फिर उस सुख से पूरे देश को जोड़कर मानो यह भरतवाक्य लिखा-

नहीं कहीं जाति-धर्म का भेदभाव कहीं
झूठा नहीं कोई व्यवहार में जीवन में।
खाते हैं तो एक साथ खेलते हैं एक साथ,
जैसा जनपद शांत समाथ वैसा सारा देश। (पृष्ठ ३९)

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्व विद्यालय

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने

डा. स्टेल्लाम्मा सेव्यर (94)

जन्मस्थान - पुनलूर, कोल्लम, केरल। एम.ए., एम.एड; एम.फिल, पी.एच.डी। 1988 से अध्यापन।

संप्रति - रीडर, एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एफ.एम.एन, कोलेज, कोल्लम. पत्र-पत्रिकाओं में लेखन। तुलसीकाव्य में श्रृंगार, रामचरित मानस में सामाजिक जीवन।

संपर्क कुट्टिप्पुरम, कुण्डरा, कोल्लम, केरल

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का प्रकाशन

केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास	- 300.00
केरल के हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	- 50.00
केरल के हिन्दी कवि - (वि.वि.का पाठ्य सामग्री)	- 20.00
देवयानी - (नाटक)	- 25.00
चिरजीव महाकाव्य (हिन्दी; मलयालम)	- 300.00
चिरजीव महाकाव्य (कलाप्रकाशन, वारणासी)	- 750.00
डा. चन्द्रशेखरन नायर की कहानियाँ	- 180.00
डा. नायरजी का सम्पादकीय	- 250.00
केरलीय प्रेमचन्द (मलयालम)	- 175.00

(1000 रुपये की बिक्री पर 40% छूट)

കേരള ഹിന്ദി സാഹിത്യ അക്കാദമി

30–ാം വാർഷിക സമ്മേളനത്തിന്റെ കാര്യപരിപാടി

സമയം : 22–9–2010 3 മണി മുതൽ

സ്ഥലം : അക്കാദമി–ശരത്ചന്ദ്രഭവനം, ലക്ഷ്മീനഗർ, ഡി.1, പട്ടം പോസ്റ്റ്, തിരുവനന്തപുരം–4

പ്രാർത്ഥന – **എസ്.ജ്യോതി**

സ്വാഗതം – **ഡോ.എസ്.തങ്കമണിഅമ്മ** (സെക്രട്ടറി ജനറൽ, അക്കാദമി)

അദ്ധ്യക്ഷൻ – **ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻനായർ** (അക്കാദമി ചെയർമാൻ)

ഉദ്ഘാടനം – **ശ്രീ.എൻ.കെ.പ്രേമചന്ദ്രൻ** (ബഹു.മന്ത്രി)

ശ്രീമതി അശ്വതി തിരുനാൾ ലക്ഷ്മീഭായ് തമ്പുരാട്ടിക്ക്

ബഹു. മന്ത്രി അക്കാദമിയുടെ 'ശ്രീ.മൂകാംബികാദേവി' പുരസ്കാരം നൽകുന്നു.

അക്കാദമിയുടെ കഴിഞ്ഞകാല ചരിത്രം ഒരു എത്തിനോട്ടം – **ശ്രീമതി ആർ.രാജപുഷ്പം**, സെക്രട്ടറി, അക്കാദമി

മുഖ്യപ്രസംഗം – **ശ്രീ.പാലോട് രവി** (ചെയർമാൻ, സംസ്കാരസമിതി)

'കംപാരിറ്റീവ് റിസർച്ച് സെന്റർ' എന്ന സ്ഥാപനം ബഹു.മന്ത്രി ഉദ്ഘാടനം ചെയ്യുന്നു

റിസർച്ച് സെന്ററിനെപ്പറ്റി **ഡോ.എൻ.പി.ഉണ്ണി** (മുൻ വി.സി. സംസ്കൃത സർവ്വകലാശാല, കാലടി) സംസാരിക്കുന്നു.

അക്കാദമിയുടെ ആജീവനാംഗമായ സി.ശരത്ചന്ദ്രന്റെ പേരിലുള്ള വിശേഷാൽ പതിപ്പ്
ശ്രീ.നീലൻ (അമൃത ടി.വി.) പ്രകാശനം ചെയ്തുകൊണ്ട് സംസാരിക്കുന്നു.

സി. ശരത്ചന്ദ്രനെ സുഹൃത്തുക്കൾക്കുവേണ്ടി ശ്രീ.സി.എസ്. വെങ്കിടേശ്വരൻ അനുസ്മരിക്കുന്നു.

എസ്.ബി.ടി.യുടെ
പുരസ്കാര വിതരണം – **ശ്രീ. പി.വി.ശിവശങ്കരപിള്ള,** (ജനറൽ മാനേജർ, എസ്.ബി.ടി., രാജഭാഷ)

എസ്.ബി.ടി. പുരസ്കാരം സ്വീകരിക്കുന്നവർ – **(1) പ്രൊ.പി.കൃഷ്ണൻ (കണ്ണൂർ)**
(2) ഡോ.ഷീനാ ഈപ്പൻ (കോഴഞ്ചേരി)

മാനവശേഷിവികസന മന്ത്രാലയത്തിന്റെ അവാർഡ്
അശ്വതിതിരുനാൾ തമ്പുരാട്ടി ഡോ.ആർ.സുരേന്ദ്രന് (ആർസു) സമ്മാനിക്കുന്നു.

കേരള ഹിന്ദി സാഹിത്യ അക്കാദമി വിദ്വാന്മാരെ ആദരിക്കുന്നു :
സമാദരിക്കപ്പെടുന്നവരെ ഡോ.എസ്.തങ്കമണിഅമ്മ പരിചയപ്പെടുത്തുന്നു.

സമാദരിക്കപ്പെടുന്നവർ – **(1) ഡോ.കെ.വത്സല** (ചെന്നൈ), **(2) ഡോ.സ്റ്റെല്ലാമ്മസേവ്യർ** (കൊല്ലം), **(3) ഡോ.പ്രസന്ന കുമാരി** (ഗവ.മഹിളാകോളേജ്), **(4) പ്രൊഫ.ശാന്തി** (ഗവ.മഹിളാകോളേജ്), **(5) പ്രൊഫ.ജയചന്ദ്രൻ** (അഞ്ചൽ), **(6) ശ്രീ.കെ.സി.അജയകുമാർ** (മംഗലാപുരം), **(7) ശ്രീ. തത്തോത്തു ബാലകൃഷ്ണൻ** (കോഴിക്കോട്), **(8) ശ്രീ.രവീന്ദ്രൻപിള്ള** (കേരള ഹിന്ദി പ്രചാരസഭ), **(9) ശ്രീ മുഹമ്മദ് സലിംഖാൻ** (കരുനാഗപ്പള്ളി)

കോളേജ് വിദ്യാർത്ഥികൾക്ക് അക്കാദമിയുടെ ക്യാഷ് അവാർഡുകൾ – **(1) സിമി എസ്. (2) ലിജി എസ്.** (കേരള യൂണിവേഴ്സിറ്റി), **(3) അനു വി.എസ്. (4) രശ്മി പി.** (എൻ.എസ്.എസ്. മഹിളാകോളേജ്) **(5) സൂര്യ കെ. (6) ലക്ഷ്മി ജി.** (ആൾ സെന്റ്സ് കോളേജ്) **(7) ശ്രീലക്ഷ്മി എസ്.എസ്. (8) പാർവ്വതിചന്ദ്രൻ** (ഗവ.മഹിളാകോളേജ്), **(9) രാജിമോൾ (10) പ്രമോദ് പി.** (ഗവ. ട്രെയിനിംഗ് സ്കൂൾ) **(11) നൗമ്യ (12) സുജിതാലക്ഷ്മി** (കേരള ഹിന്ദി പ്രചാരസഭ)

പ്രൊഫസർ ആർ.ജനാർദ്ദനൻപിള്ള അവാർഡ് – **വിനിതാ സി.വി.** (യൂണിവേഴ്സിറ്റി കോളേജ്)

സമ്മാനിതരായവർ സംസാരിക്കുന്നു – **(1) ഡോ.ആർസു (2) പ്രൊഫ.കൃഷ്ണൻ (3) പ്രൊ.ഡോ.വത്സല**

കൃതജ്ഞത – **ഡോ.കുൽദീപ്സിംഗ് ചൗഹാൻ** (എസ്.ബി.ടി.ഹിന്ദി പ്രബന്ധക്)

- ദേശീയഗാനം -

ഇന്ന് അക്കാദമിഗ്രന്ഥങ്ങൾ പകുതിവിലയ്ക്ക് ലഭിക്കുന്നതാണ്.

केरल हिन्दि साहित्य अकादमी

30 वाँ वार्षिक सम्मेलन का कार्य-क्रम

समय : 22-9-2010 अपराह्न 3 बजे से

स्थल : अकादमी, शरत्चन्द्र भवन, लक्ष्मी नगर, डी-1, पट्टम पोस्ट, त्रिवेंद्रम-4

प्रार्थना - **एस. ज्योति**

स्वागत - **डॉ. एस. तंकमणि अम्मा** (महामंत्री केरल हिन्दी साहित्य अकादमी)

अध्यक्ष - **डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर** (चेयरमान, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी)

उद्घाटन - **श्री. एन.के. प्रेमचन्द्रन** (मंत्री, केरल सरकार)

श्रीमती अश्वति तिरुनाल लक्ष्मीबाई जी को अकादमी का

श्री मूकांबिका देवी पुरस्कार - समर्पण - श्री. एन.के.प्रेमचन्द्रन (आदरणीय मंन्त्री द्वारा)

अकादमी का इतिहास, प्रस्तुति - श्रीमती आर. राजपुष्पम (मंत्री के. हि. सा. अकादमी)

अकादमी के कंपारटीव रिसेर्च सेंटर का उद्घाटन - **आदर मंत्री एन.के.प्रेमचन्द्रन**

रिसेर्च सेंटर के बारे में भाषण - **डॉ. एन.पी.उण्णि** (पूर्व. वी.सी. संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी)

अकादमी के दिवंगत आजीवन सदस्य श्री शरत्चन्द्रन के नाम प्रकाशित पत्रिका का लोकार्पण - श्री.नीलन (अमृता टी.वी)

श्री. शरत्चन्द्रन का अनुस्मरण - श्री.सी. वेंकिटेश्वरन

एस.बि.टि. का पुरस्कार वितरण - श्री.पि.वी. शिवशंकर पिल्लै (महाप्रबन्धक, एस.बि.टी. राजभाषा)

पुरस्कृत विद्वान - **(1) प्रोफसर पी. कृष्णन** (कण्णूर) **(2) षीना ईप्पन** (कोषंचेरी)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार डॉ.आर. सुरेन्द्रन (आरसू) को प्रदान किया जाता है।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा विद्वानों का सम्मान। डॉ.एस.तंकमणि अम्मा विद्वानों का परिचय देती है।

सम्मान पानेवाले विद्वान - (1) डॉ. वत्सला (चेन्नै) **(2) डॉ. स्टेल्लम्मा सेव्यर** (कोल्लम) **(3) डॉ. प्रसन्नकुमारी** (सरकारी महिला कालेज)**, (4) प्रोफ. शान्ति** (सरकारी महिला कालेज) **(5) प्रोफ. जयचन्द्रन** (अंचल) **(6) श्री.के.सी. अजयकुमार** (मंगलापुरम) **(7) श्री.तत्तोत बालकृष्णन** (कालिकट) **(8) श्री.जि. रवीन्द्रन पिल्लै** (के. हि. प्रचार सभा) **(9) श्री.मुहम्मद सलीम ख़ान** (करुनागप्पल्ली)

कालेजीय छात्र-छात्राओं को अकादमी का नकद पुरस्कार - (1) सिमी. एस. (2) लिजी. एस (केरल वि. विद्यालय) **(2) अनु वि.एस. (4) रश्मि पी.** (एन.एस.एस.महिला कालेज) **(5) सूर्या के. (6) लक्ष्मी जी** (ऑल सेंटम कालेज) **(7) श्रीलक्ष्मी एस.एस. (8) पार्वतीचन्द्रन** (सरकारी महिला कालेज) **(9) राजिमोल (10) प्रमोद पी** (प्रशिक्षण विद्यालय) **(11) नौम्य (12) सुजिता लक्ष्मी** (केरल हिन्दी प्रचार सभा)

प्रोफसर आर. जनार्द्दनन पिल्लै पुरस्कार - विनिता सी.वी. (यूणिवेरसिटी कालेज)

सम्मानित विद्वानों के भाषण - (1) डॉ. आर.सुरेन्द्रन (आरसू) (2) प्रोफ. पी. कृष्णन (3) डॉ. वत्सला

कृतज्ञता - डॉ. कुलदीप सिंह चौहान (हिन्दी अधिकारी, एस.बि.टी.)

- राष्ट्रगीत -

अकादमी की पुस्तकें आधे मूल्य पर आज मिल जाएँगी

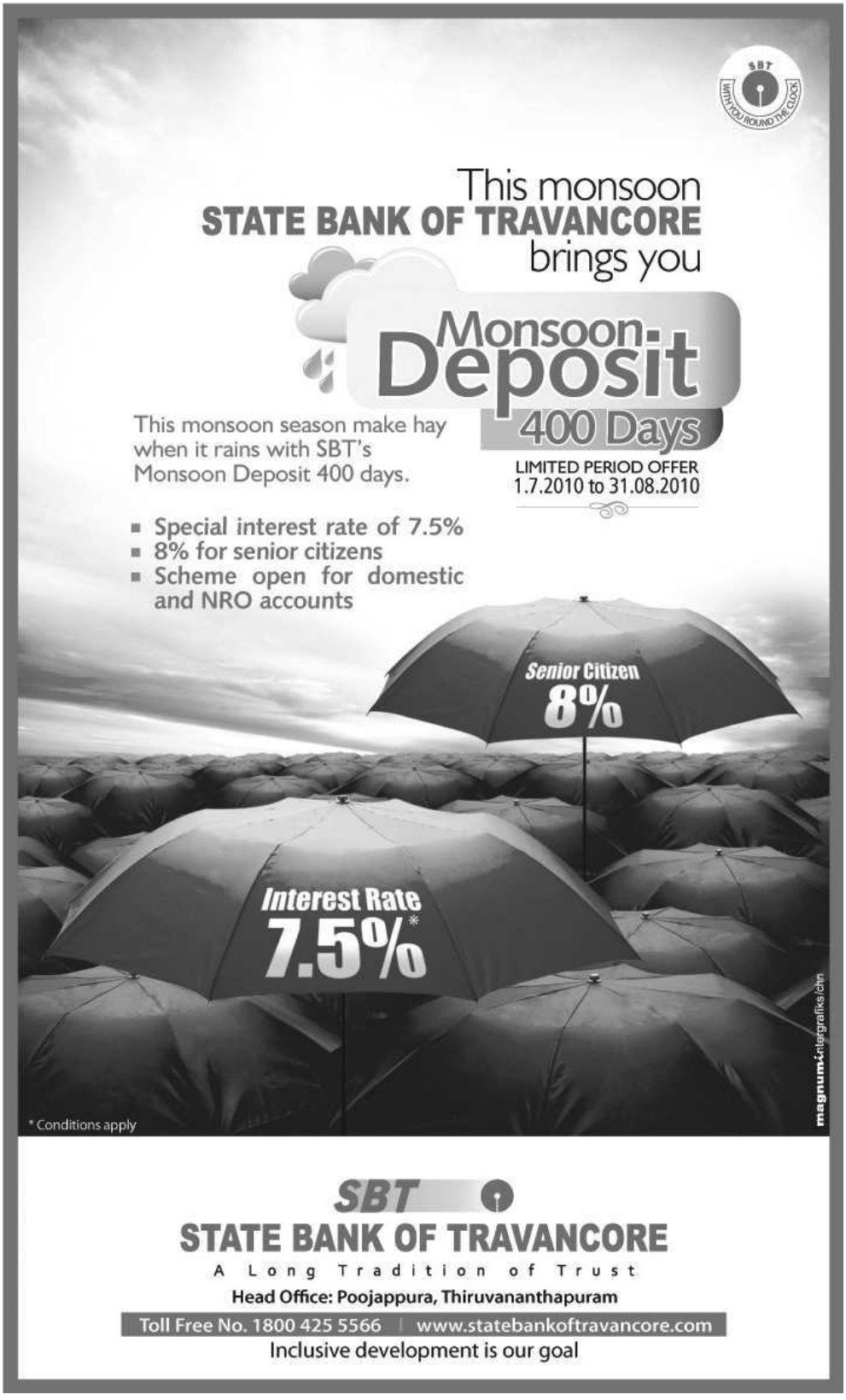

SBT

STATE BANK OF TRAVANCORE

A Long Tradition of Trust

Head Office: Poojappura, Thiruvananthapuram

Toll Free No. 1800 425 5566 | www.statebankoftravancore.com

Inclusive development is our goal

कोल्लम में एक जन-सेवा सम्मेलन का उद्घाटन करते हैं, श्री. पीताम्बर कुरुप। साथ खडे हैं डा. चन्द्रशेखरन नायर।

भाषासंगम के वार्षिक सम्मेलन में पूर्व केरल वी.सी. डा.बालमोहन तंपि बोलते हैं। बैठे हैं - सर्वश्री तुंपमण तंकप्पन, के.जी.बालकृष्णपिल्लै, कवि प्रो.डी.विजय चन्द्रन और प्रोफसर के पाप्पूट्टी

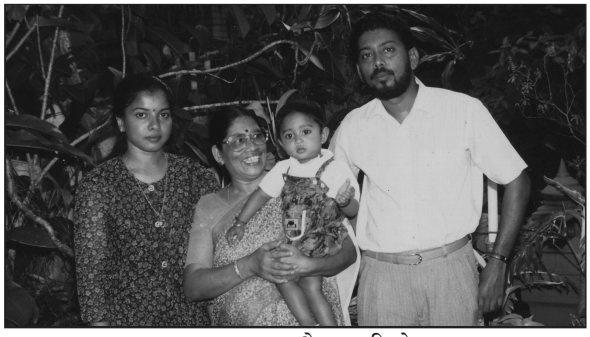

शरत्चन्द्रन माता और पत्नी के साथ

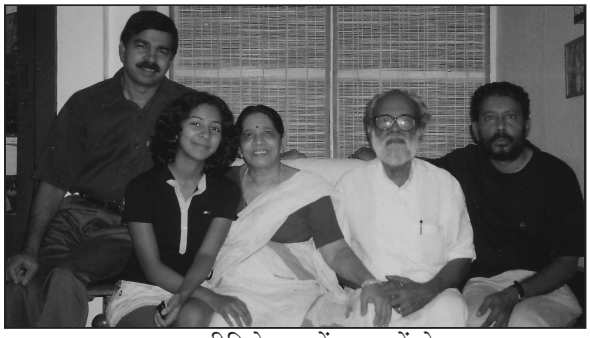

शरत्चन्द्रन श्रीनिकेतन में स्वजनों के साथ

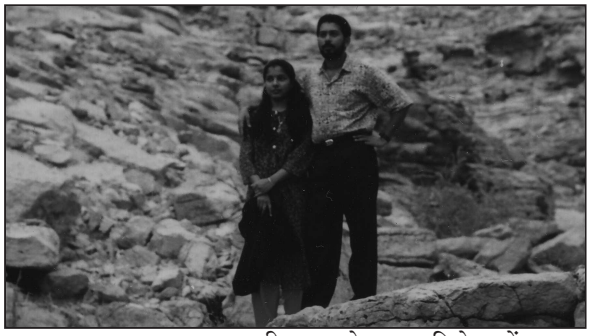

शरत्चन्द्रन पत्नी सुधा के साथ विदेश में।

शरत्चन्द्रन परिवार के किसी कार्यक्रम में

पिता के शताभिषेक सम्मेलन के साथ संपन्न भानजी दर्शना का संगीत आल्बम प्रसिद्ध सिनेमा संविधायक श्री श्यामप्रसाद लोकार्पित करते हैं। शरत्चन्द्रन निर्देशन देते हैं।

पिताजी के शताभिषेक सम्मेलन में शरत्चन्द्रन सबसे पीछे। दीप जलाते हैं प्रख्यात गान्धी स्मारक निधि चेयरमेन श्री. पी.गोपिनाथन नायर।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।